आदिवासी साहित्य विमर्श

संपादक

डॉ. मोहन चव्हाण

सहसंपादक

डॉ. विजयप्रसाद अवस्थी

प्रा. गणेश शेकोकार

प्रा. संतोष पगार

प्रा. राकेश वळवी

Scanned with OKEN Scanner

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। सर्वाधिकार मूल रचनाकारों के पास सुरक्षित है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2019

ISBN 978-93-86835-65-9

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 800 रुपये

आवरण

मीना-किशन सिंह

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

AADIVASI SAHITYA VIMARSH—Collection of essays on Aadivasi Discourse *edited by* Prof. Mohan Chavhan

Scanned with OKEN Scanner

26. माध्यमों को आदिवासियों की ओर जाना चाहिए 149
प्रा. रमेश शेजवळ

27. हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन 155
संगीता रामनाथ देशमुख

28. हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी-विमर्श 160
प्रा. गातवे युवराज शामराव

29. जख़्म महसूस किए जाते हैं, पढ़े या सीखे नहीं जाते! 163
प्रा. शांताराम वळवी

30. समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी-विमर्श 170
प्रा. पटेकर विश्वनाथ चन्द्रकान्त

31. हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी-विमर्श 175
निलेश एस. पाटील

32. हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी साहित्य 178
डॉ. मछिन्द्र पाटिलबा उगले

33. हिन्दी उपन्यास साहित्य में आदिवासी-विमर्श 181
प्रा. कैलास काशिनाथ बच्छाव

34. समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी जीवन 185
डॉ. अश्विनी कुमार चिचोंलीकर

35. 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास का भाषा और शैलीगत अध्ययन 188
डॉ. अशोक पवार

36. हिन्दी कथा-साहित्य में आदिवासी-विमर्श 193
डॉ. जाधव अर्जुन रतन

37. 'धार' उपन्यास में आदिवासी-विमर्श 197
डॉ. अनिता भीमराव काकड़े

38. 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में आदिवासी-विमर्श 202
प्रा. मंगला पांडुरंग भँवर

39. हिन्दी काव्य में आदिवासी शबरी का चारित्रांकन 207
डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी

40. 'बेघर सपने' : संथाल परिवेशों की ज़िन्दा तस्वीर 211
विद्या ए.एस.

Scanned with OKEN Scanner

'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास का भाषा और शैलीगत अध्ययन

डॉ. अशोक पवार

हिन्दी कथा-साहित्य में बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक से ही अस्मितावादी उपन्यासों की एक धारा स्पष्ट रूप से तीन तरह के विमर्श स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, आदिवासी-विमर्श पर आधारित कथा-साहित्य में देखी जा सकती है, जिसमें रणेन्द्र जी का 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास सन् 2009 में प्रकाशित हुआ। स्थूल रूप में देखा जाए तो यह उपन्यास झारखंड की असुर जनजाति के आदिकाल से लेकर वर्तमान तक के एतिहासिक संघर्षों का दस्तावेज है।

'ग्लोबल गाँव के देवता' कुल सौ पृष्ठों का लघु उपन्यास है, जिसे रणेन्द्र ने लम्बे कार्यकाल में पूरा किया है। उपन्यास में जिस तरह की भाषा का प्रयोग हुआ है वह लेखक की गहरी सोच का परिणाम है। लेखक ने परिस्थितियों, समस्याओं और पात्रों को ध्यान में रखते हुए भाषा-प्रयोग किया है। उपन्यास की कथाभूमि किकट प्रदेश का बरवे जिला है। अतः उपन्यास की भाषा बरवे जिले की आंचलिक भाषा है; साथ ही लेखक के द्वारा की गई टिप्पणियों की भाषा परिनिष्ठित हिन्दी है। लेखक ने उपन्यास के लेखन में अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है, जिससे स्थितियाँ-परिस्थितियाँ स्पष्ट उभरी हैं। उपन्यास की भाषा-शैली पर सर्वांगीण दृष्टि डालने पर इसे और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

उपन्यास में पात्रानुकूल भाषा, बिम्ब और प्रतीकों से युक्त भाषा, मिथकों, उपमानों से युक्त भाषा, आंचलिक भाषा, मुहावरों-कहावतों से युक्त भाषा का प्रयोग हुआ है। शैली की दृष्टि से विचार करें तो प्रमुखता से मनोविश्लेषणात्मक शैली, प्रश्न-शैली, भावात्मक शैली, गीतात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, कथात्मक शैली, पत्र शैली का प्रयोग उपन्यास में किया गया है। भाषा-शैली के इस स्वरूप को यहाँ विश्लेषित किया जा सकता है–

भाषा

पात्रानुकूल भाषा– 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में लेखक ने पात्रानुकूल

भाषा का प्रयोग किया है। यह उपन्यास की विशेषता कही जा सकती है। ऐसा करने से पात्रों की वास्तविक स्थिति, पात्रों की मानसिक स्थिति और पात्रों के विचार पाठकों के सम्मुख आते हैं। यह उपन्यास (क्षेत्रीय) आंचलिकता लिये हुए है। अतः उपन्यास के पात्रों की भाषा में इसे देखा जा सकता है। इस उपन्यास में रणेन्द्र ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। इस बात का एतवारी, बुधनी, लालचन, बालचन, रुमझुम, सोमा, गन्दूर, गोनूसिंह, लोधमा के संवादों द्वारा पता चलता है। बुधराम सिंह खेरवार एक जगह कहता है–"अब आप ही लोग बताइए देवी को नाखुश करके पूरे गाँव पर संकट मोल लें हम लोग? मजबूरी में करना पड़ता है ई सब। फेरा में पड़िएगा तो समझ में आ जाएगा। अब समझिए कि एतना जोर से हड़काता है सिंहजीवा कि दुबारा टोकने की हिम्मत नहीं पड़ती है।"[1] बुधराम की भाषा में परम्परा प्रियता नजर आती है, साथ ही उसकी परेशानी भी स्पष्ट होती है। उपन्यास में ग्रामीण और स्थानीय भाषा का प्रयोग हुआ है। उपन्यास के पात्रों में कुछ पढ़े-लिखे शिक्षित पात्र भी हैं, जो मानक हिन्दी बोलते हुए पाए जाते हैं। रुमझुम की बात को देखिए "आखिर हमारी छाया से भी क्यों चिढ़ते हैं ये लोग माड़-भात खिलाकर, अनपढ़-अधपढ़ शिक्षकों के भरोसे, फुसलावन स्कूल के हमारे बच्चे, ज्यादा-से-ज्यादा स्किल्ड लेबर, पिऊन, क्लर्क बनेंगे और क्या यही हमारी औकात है। हमारी ही छाती पर ताजमहल जैसा स्कूल खड़ा कर हमारी हैसियत समझाना चाहते हैं लोग।"[2]

प्रतीकात्मक भाषा–रणेन्द्र जी का उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' प्रतीकात्मकता से भरा है। उपन्यास के शीर्षक में देवता शब्द प्रतीकात्मक है। ये देवता ग्लोबल गाँव के हैं जो पूँजीपतियों, राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय कम्पनियों के मालिक नेता हैं। प्रतीकात्मक भाषा के कारण उपन्यास में बौद्धिकता और चिन्तन पक्ष बड़ा मजबूत बन पड़ा है। इसलिए उपन्यास केवल कथा न रहकर विचार बन गया है चाहे वे असुर जनजाति के लोग हों, प्रशासकीय अधिकारी हों, सांसद हों, ठेकेदार हों, बाबा लोग हों या फिर कम्पनियाँ जैसे शिंडाल्को, वेदांग, पोद्दार माइंस सबके सब प्रतीक हैं। उपन्यास की केन्द्रीय भूमि किकट प्रदेश है। यह झारखंड की भूमि है, लेकिन यह भूमि भारत के किसी भी राज्य की हो सकती है। इसलिए उपन्यासकार ने प्रस्तुत उपन्यास में प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग करके कथा को विस्तार दिया है। एक उदाहरण से इसे स्पष्ट कर सकते हैं। सन् 1661 की घटना जो राजा मॅटकोम और अँग्रेजों की नियत की घटना उपन्यास में प्रतीक बनकर आई है। लेखक ने लिखा है "राजा मॅटकोम का कटा सिर और चाचा का कटा सिर आपस में गड़बड़ हो गए। मेरा दिमाग अपनी जगह से हिलता मालूम हुआ, एक बार फिर समझ में नहीं आ रहा था मैं कहा हूँ और किस काल में हूँ।"[3]

आंचलिक भाषा–'ग्लोबल गाँव के देवता' झारखंड के किकट प्रदेश अर्थात

बरवे जिले के क्षेत्र विशेष के साथ जुड़ी हुई कथा बताई है। इसमें स्थानीय लोकजीवन तथा उनकी समस्याएँ चित्रित हुई हैं। इस अर्थ में यह उपन्यास आंचलिक बन जाता है। अतः स्पष्ट है कि वहाँ के लोग उपस्थित होंगे और वे अपना सुख-दुःख अपनी भाषा में व्यक्त करेंगे। लेखक ने क्षेत्र विशेष की कथा को प्रामाणिकता और यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने के लिए आंचलिक भाषा का प्रयोग किया है। कथा के अधिकतर पात्र ग्रामीण और अशिक्षित हैं, अतः वे अपनी ही भाषा में बोलते हैं। उपन्यास में असुर जनजाति का जीवन चित्रित होने से उनकी भाषा का प्रयोग हुआ है। उपन्यास के सभी दृश्यों में आंचलिक शब्द बिखरे पड़े हैं– चोरी-डकैती, छिनतई-मर्डर, खेरवार, मेरठा, उफनाना, गोड़ दबाना, दीया-बाँती, पल्लो-पल्लो, पूजा-पाँति, बाप-पुत्ता। पात्रों के नाम भी आंचलिक हैं, जैसे रुमझुम, एतवारी, गोनू, लालचन, बालचन, रामचन, खेरवार, अजोध्या सिंह।

मुहावरों-कहावतों का प्रयोग

'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास का परिवेश क्षेत्रीय होने से वहाँ के निवासियों की भाषा में मुहावरों-कहावतों का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है, इससे अभिव्यक्ति में वास्तविकता आ गई है। भाषा का सहज और स्वाभाविक स्वरूप इससे जान पड़ता है। मुहावरों और कहावतों को ग्राम-देहात की भाषा का सौन्दर्य भी कहा जाता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–'बिल्ली को दूध की रखवाली का भार', 'धज्जियाँ उड़ाना', 'आग-बबूला होना', 'सोने में सुहागा', 'ओल को गलाना' और 'कोल को समझाना', 'जाँघ के नीचे से निकलना', 'कानों में शहद उतरना', 'गड़बड़ होना', 'खाल खींचना', 'पानी पड़ना'–ऐसे मुहावरों-कहावतों का प्रयोग हुआ है।

द्वंद्व शब्दों का प्रयोग–द्वंद्व शब्दों का प्रयोग ग्रामीण भाषा का सौन्दर्य है। क्षेत्रीयता इस उपन्यास का प्राण है, अतः उपन्यास में द्वंद्व शब्दों का प्रयोग सार्थकता का परिचायक है। यह भी क्षेत्रीय भाषा की विशेषता होती है जिसका प्रयोग करके लेखक ने पात्रों और विषय को न्याय देने की पूरी कोशिश की है। सूर-असूर, मुहावजें-पुनर्वास, पन्द्रह-बीस, जानने-समझने, बाजार-हाट, दसवीं-ग्यारहवीं, शिक्षा-विक्षा, देख-सून, जर-जमीन, प्रखंड-अंचल, जोर-जब्बर, कपड़ा-लत्ता, फलाँ-फलाँ, खर्चा-पानी, दिन-रात, गाँव-जवार, पूजा-पाठ, पर्व-त्यौहार, मिट्टी-बेटी, चाय-गुमटी, दवा-दारू ऐसे शब्दों का प्रयोग उपन्यास में अधिक मात्रा में हुआ है।

अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग–यह उपन्यास 21वीं शताब्दी में लिखा गया उपन्यास है। उपन्यास में पढ़े-लिखे पात्र भी उपस्थित हैं, अतः उनकी भाषा अँग्रेजी मिश्रित है। साथ-ही-साथ उपन्यासकार ने नौकरी-व्यवसाय, सरकारी कार्यालय तथा मशीनरियों

Scanned with OKEN Scanner

के नाम अँग्रेजी में ही प्रयुक्त किए हैं, जैसे–पी.टी.जी. गर्ल्स रेजिडेंसियल स्कूल, पोस्टिंग, हेडमिस्ट्रेस, टिचर्स, बॉक्साईट, ग्रॅज्युएट, टीम, ट्यूबलाईट, पोर्टेबल टीवी, गैस-सिलेंडर, स्कूल कैम्पस, लेबर, प्राइवेट, क्लिनिक, मैनेजर, बुलेट, मोटर, साइकिल, ट्रक, कन्फर्म, सीलिंग, ट्रान्सफर, एडजस्ट, ड्रामा ऐसे अनेक शब्दों का प्रयोग उपन्यास में नयापन भरता है।

उपन्यास की शैली–शैली का सम्बन्ध लेखन-पद्धति से है। इसे अँग्रेजी में 'स्टाईल' कहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी तरह से बोलता है यह उसकी शैली होती है। लेखन के बारे में कहना हो तो प्रत्येक लेखक अपनी पद्धति से लिखता है। लेखक को किसी कृति का लेखन करते समय पात्रों की स्थिति, उनकी मनोदशा, कथा-प्रसंग, परिवेश चित्रण आदि का वर्णन करते समय भिन्न-भिन्न शैलियों का प्रयोग करना होता है इससे उपन्यास में सहजता, स्वाभाविकता, रोचकता जैसे गुण आ जाते हैं। अपने विषय को अभिव्यक्त करने के लिए लेखक भिन्न-भिन्न शैलियों का प्रयोग करता है। इससे लेखक की कुशलता का परीक्षण भी होता है। विषय को स्पष्ट करने के लिए शैली का चुनाव करना लेखक की कुशलता है। 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में लेखक ने अनेक प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है जिनमें प्रमुख हैं–पत्रशैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, भावात्मक शैली, कथात्मक शैली।

पत्रशैली–'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में लेखक ने एक जगह पर पत्रशैली का प्रयोग करके प्राचीन किकट प्रदेश की (बरवे जिला) सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों के साथ उनकी समस्याओं का अंकन किया है। उपन्यास का चरित्र रुमझुम प्रधानमन्त्री के नाम चिट्ठी लिखता है। वैसे पत्रों का उपयोग सन्देश पहुँचाने के लिए ही किया जाता रहा है, लेकिन लेखक ने सन्देशवहन के साथ-साथ पत्र लिखने वाले की स्वभावगत विशेषताएँ भी उजागर की हैं। इस तरह पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं के साथ उनकी आशा, आकांक्षा, जिजीविषा, उनकी जनतन्त्र प्रियता उजागर हुई है। एक उदाहरण देखिए–"बड़ी हिम्मत बाँधकर यह खत आपको लिख रहा हूँ। महोदय, शायद आपको मालूम हो कि हमारा असुर समाज, निजाम के इस मानवीय चेहरे की तलाश हजारों सालों से करता रहा है। हमारे पूर्वजों ने जंगलों की रक्षा करने की ठानी तो उन्हें राक्षस कहा गया। लेकिन बीसवीं सदी की हार हमारी असुर जाति की अपने पूरे इतिहास में सबसे बड़ी हार थी। इस बार कथा-कहानियों वाले सिंगबोंगा ने नहीं, टाटा जैसी कम्पनियों ने हमारा नाश किया।"[4]

मनोविश्लेषणात्मक शैली–प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित पात्र अपने मन के विचार, भाव और निष्कर्ष बताते रहे हैं। इससे उनके मनोभावों का बड़ा सुन्दर विश्लेषण हुआ है जिससे स्थितियाँ और अधिक स्पष्ट होने में सहायता हुई है। उपन्यास में कई जगह पर इस शैली का प्रयोग हुआ है। उदा. देखिए-"विजयी जाति

Scanned with OKEN Scanner

को पराजित के प्रति एक ही भाव रखती है, वह है घृणा। युद्ध में विजय उसे मिलती है जो ज्यादा हिंसक, ज्यादा बर्बर और ज्यादा कुशल-प्रशिक्षित हत्यारा होता है युद्ध में विजय, सत्य और न्याय की नहीं हुआ करती, जैसा किस्सों-कहानियों में हमें बताया जाता है।"[5]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि उपन्यास की भाषा कथ्य विषय को पूरी क्षमता के साथ अभिव्यक्त करने में सफल सिद्ध होती है। लेखक ने पूरी ईमानदारी और निडरता से प्रसंगों को उभारा है, साथ ही असुर जनजाति की व्यथा को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है। उनकी भाषा-शैली ने उपन्यास में जान डाल दी है। यह उपन्यास एक कथा न रहकर घटनाओं का ऐतिहासिक सत्य और आधुनिक युगीन वैश्वीकरण की नीति को उद्‌घाटित करने वाली सक्षम कृति बन गई है।

सन्दर्भ

1. ग्लोबल गाँव के देवता-रणेन्द्र, भारतीय ज्ञानपीठ 6, नई दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण : 2016, पृ. 13।
2. वही, पृ. 19।
3. वही, पृ. 38।
4. वही, पृ. 93-84।
5. वही, पृ. 42।

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. मोहन लक्ष्मणराव चव्हाण

जन्म –जाम्भरुन (टांडा) ता. जि.-हिंगोली (महाराष्ट्र)।

शिक्षा –एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी. (हिन्दी), डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद।

शोध –1. लघु शोध प्रकल्प–यू.जी.सी., क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे 2. बृहत शोध प्रकल्प–बी.सी.यु.डी., पुणे विश्वविद्यालय, पुणे 3. बृहत शोध प्रकल्प–यू.जी.सी., नई दिल्ली।

प्रकाशन – 1. निराला की साहित्य साधना–एक अनुशीलन; 2. बनजारा बोली भाषा–एक अध्ययन 3. गरिमा (काव्य-संग्रह); 4. अंतरिक हलचल-(मराठी से हिन्दी में अनुवाद); 5. जंगल पहाड़ के पाठ (हिन्दी से मराठी में अनुवाद, शीघ्र प्रकाश्य); 6. हिन्दी व मराठी की कविताएँ क्रमश: हिन्दी एवं मराठी दैनिक पत्रों में प्रकाशित; 7. हिन्दी विषय के शोधालेख राष्ट्रीय स्तर के पत्रिकाओं में प्रकाशित।

क्रिया कलाप –1. राष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं विश्वविद्यालय में आलेख वाचन एवं आलेख प्रकाशित; 2. आकाशवाणी औरंगाबाद तथा नाशिक से कविता पाठ एवं मैथिलीशरण गुप्त पर 'राष्ट्र पुरोधा' शीर्षक से वार्ता प्रसारित; 4. 'गरिमा' काव्य संकलन की कविताओं का प्रसारण।

संप्रति –विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एच.पी.टी. एवं आर.वाय.के. विज्ञान महाविद्यालय, नासिक-422005 (महाराष्ट्र)

978-93-86835-65-9

9 789386 835659

₹ 800.00

अनुज्ञा बुक्स

दिल्ली-110032

Scanned with OKEN Scanner

New Revised Syllabus (CBCS Pattern) of
KAVAYITRI BAHINABAI CHAUDHARI
NORTH MAHARASHTRA UNIVERSITY
S.Y. B.Sc. : Semester-IV

KBC
NMU

SOCIO-ECONOMIC GEOGRAPHY OF MAHARASHTRA

(GEOGRAPHY-PAPER-II : Gg 2)

Dr. SURESH C. AHIRE
Dr. SATISH PATIL
Dr. PRASHANT R. TORAWANE
Dr. AMOL R. BHUYAR

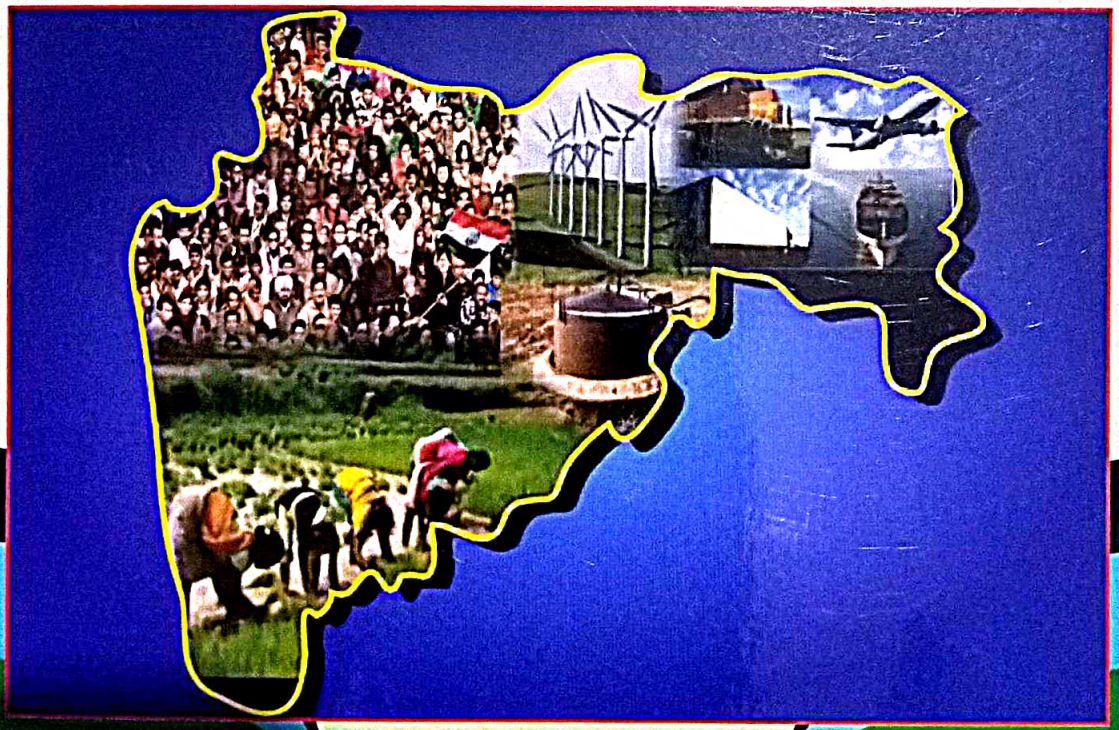

NIRALI PRAKASHAN
ADVANCEMENT OF KNOWLEDGE

A TEXT BOOK OF

SOCIO-ECONOMIC GEOGRAPHY OF MAHARASHTRA

GEOGRAPHY

(Course : Gg - 402 (DSC)) [CBCS]

S.Y.B.Sc.: Semester - IV : Paper - II

According to New Revised Syllabus of
Kavayitri Bahinabai Chaudhari
North Maharashtra University, Jalgaon, June 2019

Dr. SURESH C. AHIRE
Assistant Professor
Dept. of Geography,
Uttamrao Patil Arts and Science
College, Dahivel Dist. Dhule (M.S.)

Dr. PRASHANT R. TORAWANE
Assistant Professor
Dept. of Geography,
PSGS Arts, Science and Commerce
College, Shahada, Dist. Nandurbar (M.S)

Dr. SATISH PATIL
Assistant Professor
Dept. of Geography
SVS Dadasaheb Raval Arts, Science
and Commerce College Dondaicha,
Dist. Dhule (M.S.)

Dr. AMOL R. BHUYAR
Assistant Professor
Dept. of Geography,
G.T. Patil Arts, Science and
Commerce College, Nandurbar (M.S.)

Price : ₹ 45.00

NIRALI PRAKASHAN
ADVANCEMENT OF KNOWLEDGE

N0356

S.Y.B.Sc. Geography (P-II) : Sem-IV
First Edition : February 2020
ISBN 978-93-89944-20-4
© : Authors
The text of this publication, or any part thereof, should not be reproduced or transmitted in any form or stored in any computer storage system or device for distribution including photocopy, recording, taping or information retrieval system or reproduced on any disc, tape, perforated media or other information storage device etc., without the written permission of Authors with whom the rights are reserved. Breach of this condition is liable for legal action.
Every effort has been made to avoid errors or omissions in this publication. In spite of this, errors may have crept in. Any mistake, error or discrepancy so noted and shall be brought to our notice shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher nor the authors or seller shall be responsible for any damage or loss of action to any one, of any kind, in any manner, therefrom.

Published By :
NIRALI PRAKASHAN
Abhyudaya Pragati, 1312, Shivaji Nagar,
Off J.M. Road, Pune – 411005
Tel - (020) 25512336/37/39, Fax - (020) 25511379
Email : niralipune@pragationline.com

POD

Printed By :
STAR COPIERS PVT. LTD.
Kumthekar Road, Sadashiv Peth,,
PUNE - 411 030,,
Tel - (020) 24479201.

DISTRIBUTION CENTRES

PUNE

Nirali Prakashan : 119, Budhwar Peth, Jogeshwari Mandir Lane, Pune 411002, Maharashtra.
Tel : (020) 2445 2044, Mob. No. 9657703145.
Email: bookorder@pragationline.com, niralilocal@pragationline.com

Nirali Prakashan : S. No. 28/27, Dhyari, Near Pari Company, Pune 411041
Tel : (020) 24690204 Fax : (020) 24690316
Email : dhyari@pragationline.com, bookorder@pragationline.com

MUMBAI

Nirali Prakashan : 385, S.V.P. Road, Rasdhara Co-op. Hsg. Society Ltd., Girgaum, Mumbai 400004, Maharashtra
Tel : (022) 2385 6339 / 2386 9976, Fax : (022) 2386 9976
Email : niralimumbai@pragationline.com

DISTRIBUTION BRANCHES

JALGAON

Nirali Prakashan : 34, V. V. Golani Market, Navi Peth, Jalgaon 425001, Maharashtra, Tel : (0257) 222 0395,
Mob : 94234 91860

KOLHAPUR

Nirali Prakashan : New Mahadvar Road, Kedar Plaza, 1st Floor Opp. IDBI Bank Kolhapur 416 012, Maharashtra. Mob : 9850046155

NAGPUR

Nirali Prakashan : Above Maratha Mandir, Shop No. 3, First Floor, Rani Jhanshi Square, Sitabuldi, Nagpur 440012, Maharashtra Tel : (0712) 254 7129

DELHI

Nirali Prakashan : 4593/15, Basement, Aggarwal Lane, Ansari Road, Daryaganj, Near Times of India Building, New Delhi 110002
Mob : 08505972553

BANGALURU

Nirali Prakashan : Maitri Ground Floor, Jaya Apartments, No. 99, 6th Cross, 6th Main, Malleswaram, Bangaluru 560 003, Karnataka
Mob : +91 9449043034
Email: niralibangalore@pragationline.com

Note: Every possible effort has been made to avoid errors or omissions in this book. In spite this, errors may have crept in. Any type of error or mistake so noted, and shall be brought to our notice, shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher, nor the author or book seller shall be responsible for any damage or loss of action to any one of any kind, in any manner, therefrom. The reader must cross check all the facts and contents with original Government notification or publications.

INNOVATIVE PRACTICES IN TEACHING AND EVALUATION

- EDITORS -

Dr. M. S. Raghuwanshi | Dr. Kailas S. Chaudhari

Prashant

Innovative Practices in
Teaching and Evaluation

© Reserved

Publisher

Rangrao Patil
3, Pratap Nagar,
Sant Dnyaneshwar Mandir Road,
Near Nutan Maratha Mahavidyalaya,
Jalgaon 425 001.

Phone | Web | Email

0257-2235520,2232800
www.prashantpublications.com
prashantpublication.jal@gmail.com

Edition | ISBN | Price

Feb. 2020
978-93-89501-41-4
₹ 395/-

Type Setting

Prashant Publications

Disclaimer : Views expressed in the papers / articles and other matter published in this Book are tho
authors. The editor and associate editors does not accept any responsibility and do not necessarily ag
expressed in the articles. All copyrights are respected. Every effort is made to acknowledge source m
or referred to, but the Editorial Board and Publishers does not accept any responsibility for any inad

:CONTENTS:

English

1. **Choice Based Credit System : a new approach of Evaluation in Higher Education** 1
   Dr. M. S. Raghuwanshi
2. **ICT Based Assessment in Higher Education** 4
   Dr. Jignesh B. Patel
3. **A Study on Developing Critical Thinking Skill through Authentic Materials in an ELT Classroom** 8
   Dr. Kalpesh V. Patel, Mr. Prashansinh Kishorsinh Parmar
4. **Functional Approach to teach Sanskrit** 11
   Mr. Sanjaykumar Bhikhabhai Patel, Dr. Rajubhai Parghi
5. **Importance of Feedback A Report of an Action Research** 13
   Mr. Ganesh Patel
6. **Emotional Intelligence of Secondary School Students - An Experimental Study** 15
   Mr. Chetankumar Sumanbhi Patel, Dr. Sheetal Helaiya
7. **Smartphone is an Extensive Personal Pedagogical Agent for Teacher in 21st Century** 18
   Mr. Himashu Parmar
8. **Attitudes Towards the use of ICT in the Classroom** 23
   Mr. Jitendra B. Bhimda, Dr. Prafulsinh J. Raj
9. **The Use of Ict Teaching and Learning in Geography** 25
   Dr. B. S. Patil
10. **Innovative Practices and Technical Methods of Teaching English A New Landmark** 27
    Shri. Hegade Navnath Dharmaji
11. **Innovative Practices for Teaching in Higher Education** 32
    Dr. B. J. Mumdhe
12. **Study On Higher Education in India : Issues, Challenges and Opportunities** 37
    Borane V.R., Dhamane I. G
13. **Web-based Learning – Online Learning in Higher Education** 41
    Dr. B. J. Mumdhe
14. **Google Classroom : An Innovative ICT Tool for Teaching and Learning** 46
    Dinesh B. Deore
15. **Choice Based Credit System : A Major Reform in Indian Higher Education** 48
    Borane V. R.
16. **Innovative Teaching Methods in Higher Education** 51
    Dr. Swati Vasantrao Chavan
17. **Librarary Management Systems for Higher Education** 55
    Mr. Ramanand M. Chavan, Dr. Chandrakant R. Satpute

Google Classroom : An Innovative ICT Tool for Teaching and Learning

Dinesh B. Deore
Assistant Professor in English
G. T. Patil College, Nandurbar (Maharashtra) India

Abstract:

The 21st century is well-known for the giant development in the field of technology. Almost all the walks of life is highly affected by technological development. The education field is not exception to this fact. The new generation students is having smart phones in hands and the smart phones in many ways plays important roles in the learning process. It is the need of time for teachers to use the technology for the purpose of teaching in classrooms as well as of the classrooms. There are many ICT tools students use for learning. There are many android based applications turn to be fruitful for the learning and teaching process. The applications are designed for encouraging, enhancing managing learning. Out of the many fascinating ICT tools, Google Classroom is a very demanding tool that teachers students have been using in the teaching and learning process respectively. It has many facilities for both the teachers and students. The facilities are like share chat, assignment, internal examination, immediate feedback students, calendar, uploading various types of audio-video files. The present paper aims at to demonstrate how Google Classroom application is an innovative ICT tool for teachers and students.

Keywords : Google Classroom, ICT, techno-savvy, assignment, share chat, calendar, feedback, assessment feedback.

Introduction :

In the 21st century, the field of education has received many drastic changes. The foremost changes are noticeable in the classroom, especially related to teaching and learning process. Using technological aids i.e. Information and Communication Technology (I.C.T) has changed the classroom scenario. The present classrooms are never been before. There are many technological software and application that have shaken education field. Many ICT tools turn beneficial for teachers and students, out of all, the Google Classroom made impression in the minds of users. The application is full of various facilities for the users. Phan explains the usefulness of the Google Classroom. He says, "You can post questions to your class and allow students to have discussions by responding to each other's answers (or not, depending on the setting you choose). For example, you could post a video and ask students to answer a question about it or post an article and ask them to write a paragraph in response" (qtd on www.techthought.com).

The Google Classroom application provides many facilities for teachers. The foremost is *Share With Your Class* facility. By using this facility, a teacher can have communication with the students. By creating groups of each class, the teacher comes into contact of all the classes he conducts. If the teacher wants to pass some urgent message for the entire class, then this facility makes the teacher enable to send the message on the single click. There is no need to pass the message orally or to individually or to place phone call to each student. The facility helps the teacher to pass messages such as changes in schedule of the class or if the teacher is unable to conduct the class or if the teacher is on leave. By using the facility, the students can easily get the message. This single facility brings teacher and student in contact even outside of the classrooms. Because of this facility teachers-students are in contact even beyond the classrooms.

Assignment is another facility that the Google Classroom application provides. This feature enables teacher to send assignment to the students. There is no need to conduct unit test or examination in the classroom. A teacher can assign various assignments like multiple choice questions and answers, one word or one sentence answer, broad question and answers. In the techno-savvy world, students feel technology closer rather than pen and paper. They feel more interested to appear for the examination. There is also provision of a quick result and that makes students aware of their performances. This Google Classroom facility helps students to keep in touch with the recent topic. The assignment also helps teachers to brush up students' knowledge on the concerned topics time to time. There are provisions that the students can *edit* their answer sheets. In addition, students can comment and share

get views regarding the answers they attempted in the assignment or internal examination. A teacher can assess and can place his feedback immediately so that the students can correct their answers at the same time. "Classroom is a free service for schools, non-profit organizations and anyone with a personal Google account. Classroom makes it easy for learners and teachers to connect with one another – inside and outside of schools. Classroom saves time and paper, and makes it easy to create classes, distribute assignments, communicate and stay organized" (www.play.google.com).

In the traditional way, it is quite difficult to conduct classroom examination by using papers and other physical resources. It is again equally difficult to assess the answer sheets. Keeping records and making marksheets are the clerical tasks for the teachers. On the other hand, the assignment facility saves all these processes and clerical tasks. The teacher can easily keep individual students' record for further references. Hence, it is beneficial for the students also. Regarding this facility, Sammy Ekaran in his article writes:

Google Classroom is a powerful community based social tool for learning. It allows students to post questions and receive answers from their teachers and fellow students. Furthermore, teachers can post ongoing questions and lesson materials for review at home. It can also be integrated with other Google products such as Google Forms, which can be a great way to get feedback from students.

The application also comes with a facility to upload various type of files such as images, audios and videos. In the technological world, students feel more comfortable to watch images and videos rather than lectures conducted orally. Gone those days to draw images on the blackboard with a chalk. Students feel bore to attain lectures in classroom where there are only traditional aids. Indeed, there are limitations for teachers to describes everything orally. On the other hand, if there is an image or video related to the same topic students will have better understanding and they will find the classroom learning more enjoyable. For example, if a teacher teaches orally the function of body cell, then it may be difficult for students to understand. The lecture could be bore and monotonous. If the same teacher links the images and videos of the function of body cells, then the students will have a better understanding. Indeed, the days have gone when the great orators solely depend on their powerful skill of narrating stories. On the other hand, the speakers in modern times are greatly benefited by advances such as videos, images, charts and diagrams. The Google Classroom soothe the process of teaching and learning by offering a facility of *link* and it helps to both the teacher and the students beneficial.

The Google Classroom Application provides a facility of *calendar*. A teacher can schedule an event, examination timetable or comments and all these will get deliver to the selected classes automatically on the scheduled date and time. It is a good facility for teachers to make a schedule once in an academic year and the facility of calendar will remind to both, the teacher and the students. There is no need to keep extra record for the annual schedule. It further adds facility of repeating the same tasks on the different dates for different classes. It is beneficial for teachers in another way that the teacher can segregate the calendar monthly, weekly, daily or on task basis.

Like other android based application, the Google Classroom also provides a facility of *notification*. There is no need to keep on checking for the updates for both, the teachers and the students. This application shows notification on the task bar of smartphones once it is installed so that the users can easily identify the arrival of the new messages. Whether a student or a teacher posts a message one the group, then it is quite easy for users to notice the new message. It further adds that there is an email to the users of the same group. It offers double notification for the uses so that there is no chance for missing the posts.

Thus, it is a paperless class for a teacher and a student. It allows both the end to have connectivity even beyond the physical classroom.

Works Cited :

1. https://teachthought.com/current-events/changes-new-features-in-google-classroom.
2. Sammy, Karam. Top 10 Tools for The Digital Classroom. https://elearningindustry.com/tools-for-the-digital-classroom-top-10.
3. https://play.google.com/store/apps/details?id=com.google.android.apps.classroom&hl=enIN.

1990
'A' Grade
NAAC Re-accredited
(3rd Cycle)

Kavayitri Bahinabai Chaudhari
North Maharashtra University, Jalgaon

English *for* Humanities

(A Text for SYBA Compulsory English)

'A' Grade
NAAC Re-accredited
(3rd Cycle)

Kavayitri Bahinabai Chaudhari
North Maharashtra University, Jalgaon

English *for* Humanities

(A Text for SYBA Compulsory English)

Board of Editors

Dr. Sushilkumar D. Shindkhedkar
Dr. Suresh P. Agale
Dr. Pravin S. Borse
Dr. Vishwanath M. Patil
Dr. Darbarsing D. Girase
Dr. Avinash Y. Badgujar
Dr. Anil P. Patil
Dr. Vijay P. Bachchhav
Dr. Gajanan P. Patil

Prof. Mukta Jagannath Mahajan
Chairperson, BOS

With Best Compliments
from,
Authors and Publishers

Dr. D. D. Girase

Academic
Book Publications

ENGLISH FOR HUMANITIES

ACADEMIC BOOK PUBLICATIONS

© 2019, KBC North Maharashtra University, Jalgaon

Published By
Kavayitri Bahinabai Chaudhari
North Maharashtra University,
Umavinagar, Jalgaon.

Printing | Distribution | Typesetting
Academic Book Publications
Dyandeep Apartment, Plot No.2, Chaitanya Nagar,
Opp. Progressive English Medium School, Jalgaon.
Ph.No. (0257) 2235520, 2232800
Email: academicbooksjalgaon@gmail.com

Branch
Academic Book Publications
1324, Sadashiv Peth, Near Bharat Natya Mandir, Pune -30.

ISBN
978-93-89493-00-9

Price
₹ 11

The rights of the original texts (Short Stories and Poems) are reserved by the respective writers, poets, publishers and wherever necessary, with the concerned.

'A' Grade
NAAC Re-accredited
(3rd Cycle)

MISSION OF THE UNIVERSITY

To impart relevant quality higher education to the students, to groom them to be conscious researchers, technologists, professionals and citizens, bearing the torch for disseminating knowledge in masses for sustainable socio-economic development of the society.

Contents

SEMESTER - III

Unit 1. Literature

Short Stories

1. The Lady or the Tiger? - *Frank R. Stockton* 16
2. Kabuliwallah - *Rabindranath Tagore* 25

Essays

1. Spoken English, Broken English - *G. B. Shaw* 35
2. Modern Improvements - *John Ruskin* 41

Poems

1. A Red Red Rose - *Robert Burns* 46
2. Stopping by Woods on a Snowy Evening - *Robert Frost* 49

Unit 2. Word Formation

1. Affixation 53
2. Compound Words 57

Unit 3. Skills in Writing

1. SMS 62
2. E-Mail 67
3. Internet Slang and English Language 72

SEMESTER - IV

Unit 1. Literature

Short Stories

1. The Salt Inspector - *Premchand* 85
2. All About a Dog - *A. G. Gardiner* 96

Essays

1. The Power of Prayer - *A. P. J. Abdul Kalam* 102
2. Values in Life - *Rudyard Kipling* 107

Poems

1. All the World's a Stage - *William Shakespeare* 113
2. Ozymandias - *P. B. Shelley* 117

Unit 2. Grammar

1. Sentences : Kinds and Functions 121
2. Clauses (Noun Clause, Adverbial Clause) 126

Unit 3. Communication Skills

1. Situational Dialogues 131
2. Small News Writing 135
3. Information Transfer : Non-verbal, Verbal 138

SEMESTER - III

Unit 1

LITERATURE

1990
'A' Grade
NAAC Re-accredited
(3rd Cycle)

The students of our university are from rural and tribal area, it is appreciable that syllabus of the text book is framed in such a manner that it encourages the students to learn English. Special efforts have also been made to inculcate value education, learn grammar by identifying common errors in writing, introduce them with short stories, essays, poems, prose etc. Apart from gaining deep knowledge in their field of study, the book will instill in them confidence and skill required for the intellectual growth which is essential for success in this competitive world.

- Prof. P. P. Patil
Vice-Chancellor

Academic
Book Publications

ISBN 978-93-89493-00-9
9 789389 493009

New Revised Syllabus (CBCS Pattern) of
KAVAYITRI BAHINABAI CHAUDHARI
NORTH MAHARASHTRA UNIVERSITY
S.Y. B.Sc. : Semester-IV

KBC
NMU

PRACTICAL COURSE IN ZOOLOGY

(ZOO-403)

Dr. RAJENDRA P. BORALE
Dr. YUSUF E. PATEL
Dr. YOGESH H. WASU
Dr. GOVIND H. BALDE
Dr. SATISH M. SHINDE

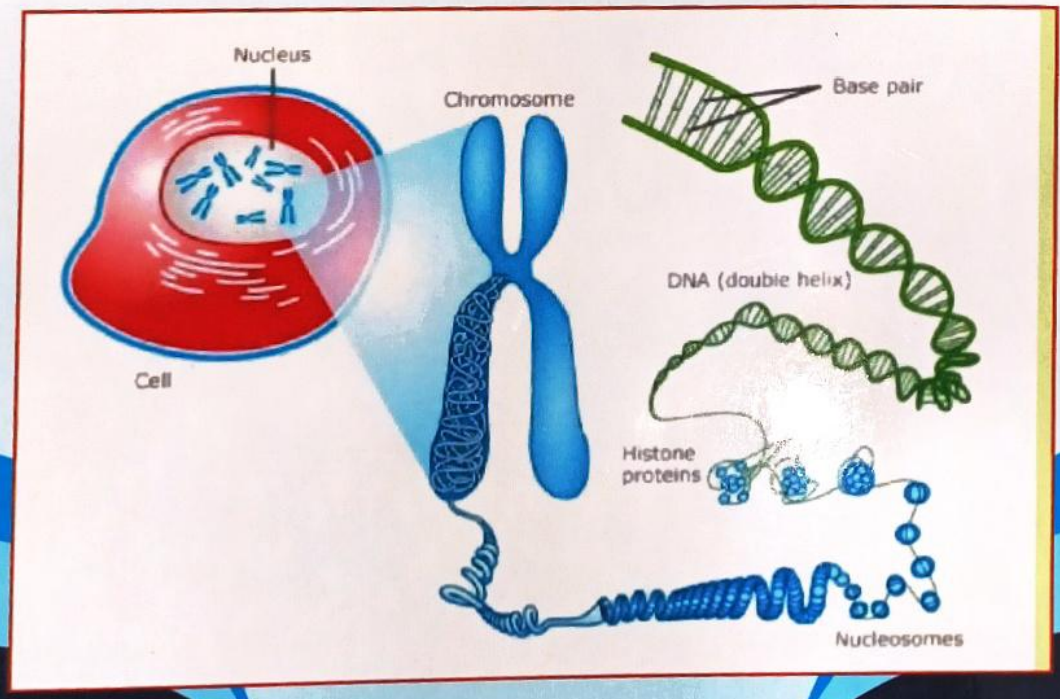

NIRALI PRAKASHAN
ADVANCEMENT OF KNOWLEDGE

INTRODUCTION TO

PRACTICAL COURSE IN

ZOOLOGY

Course : ZOO - 403 (CBCS)

S.Y.B.Sc.: Semester - IV : Paper - III

According to New Revised Syllabus of
Kavayitri Bahinabai Chaudhari
North Maharashtra University from June - 2019

Dr. RAJENDRA P. BORALE
M.Sc., Ph.D.
Associate Professor
Jaihind ET's ZB Patil College,
Dist. Dhule (M.S.)

Dr. YUSUF E. PATEL
M.Sc., Ph.D.
Assistant Professor
Iqra's H.J. Thim College,
Mehrun, Dist. Jalgaon

Dr. YOGESH H. WASU
M.Sc., Ph.D.
Assistant Professor
P.S.G.V.P.M.'s Arts, Science
& Commerce College, Shahada.

Dr. GOVIND H. BALDE
M.Sc., Ph. D.
Assistant Professor
Gajmal Tulshiram Patil Mahavidyalaya
Dist.: Nandurbar

Dr. SATISH M. SHINDE
M.Sc., Ph.D.
Assistant Professor
Jaihind ET's ZB Patil College,
Dist. Dhule (M.S.)

Price ₹ 40.00

NIRALI PRAKASHAN
ADVANCEMENT OF KNOWLEDGE

N0354

S.Y. B.Sc. : PRACTICAL COURSE IN ZOOLOGY **ISBN 978-93-89944-31-0**

First Edition : **February 2020**

© : **Authors**

The text of this publication, or any part thereof, should not be reproduced or transmitted in any form or stored in any computer storage system or device for distribution including photocopy, recording, taping or information retrieval system or reproduced on any disc, tape, perforated media or other information storage device etc., without the written permission of Authors with whom the rights are reserved. Breach of this condition is liable for legal action.

Every effort has been made to avoid errors or omissions in this publication. In spite of this, errors may have crept in. Any mistake, error or discrepancy so noted and shall be brought to our notice shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher nor the authors or seller shall be responsible for any damage or loss of action to any one, of any kind, in any manner, therefrom.

Published By :
NIRALI PRAKASHAN
Abhyudaya Pragati, 1312, Shivaji Nagar
Off J.M. Road, Pune – 411005
Tel - (020) 25512336/37/39, Fax - (020) 25511379
Email : niralipune@pragationline.com

POD

Printed By :
STAR COPIERS PVT. LTD.
Kumthekar Road, Sadashiv Peth,
Pune – 411 030,
Tel – (020) 24479201.

DISTRIBUTION CENTRES

PUNE

Nirali Prakashan (For orders within Pune) : 119, Budhwar Peth, Jogeshwari Mandir Lane, Pune 411002, Maharashtra
Tel : (020) 2445 2044, Mobile : 9657703145
Email : niralilocal@pragationline.com

Nirali Prakashan (For orders outside Pune) : S. No. 28/27, Dhayari, Near Asian College Pune 411041
Tel : (020) 24690204 Fax : (020) 24690316; Mobile : 9657703143
Email : bookorder@pragationline.com

MUMBAI

Nirali Prakashan : 385, S.V.P. Road, Rasdhara Co-op. Hsg. Society Ltd.,
Girgaum, Mumbai 400004, Maharashtra; Mobile : 9320129587
Tel : (022) 2385 6339 / 2386 9976, Fax : (022) 2386 9976
Email : niralimumbai@pragationline.com

DISTRIBUTION BRANCHES

JALGAON

Nirali Prakashan : 34, V. V. Golani Market, Navi Peth, Jalgaon 425001, Maharashtra,
Tel : (0257) 222 0395, Mob : 94234 91860; Email : niralijalgaon@pragationline.com

KOLHAPUR

Nirali Prakashan : New Mahadvar Road, Kedar Plaza, 1st Floor Opp. IDBI Bank, Kolhapur 416 012
Maharashtra. Mob : 9850046155; Email : niralikolhapur@pragationline.com

NAGPUR

Nirali Prakashan : Above Maratha Mandir, Shop No. 3, First Floor,
Rani Jhanshi Square, Sitabuldi, Nagpur 440012, Maharashtra
Tel : (0712) 254 7129; Email : niralinagpur@pragationline.com

DELHI

Nirali Prakashan : 4593/15, Basement, Agarwal Lane, Ansari Road, Daryaganj
Near Times of India Building, New Delhi 110002 Mob : 08505972553
Email : niralidelhi@pragationline.com

BENGALURU

Nirali Prakashan : Maitri Ground Floor, Jaya Apartments, No. 99, 6th Cross, 6th Main,
Malleswaram, Bengaluru 560003, Karnataka; Mob : 9449043034
Email: niralibangalore@pragationline.com

Other Branches : Hyderabad, Chennai

Note : Every possible effort has been made to avoid errors or omissions in this book. In spite this, errors may have crept in. Any type of error or mistake so noted, and shall be brought to our notice, shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher, nor the author or book seller shall be responsible for any damage or loss of action to any one of any kind, in any manner, therefrom. The reader must cross check all the facts and contents with original Government notification or publications.

New Revised Syllabus (CBCS Pattern) of
KAVAYITRI BAHINABAI CHAUDHARI
NORTH MAHARASHTRA UNIVERSITY
S.Y. B.Sc. : Semester-IV

KBC
NMU

EVOLUTIONARY BIOLOGY

(ZOOLOGY-PAPER-II : ZOO-402)

Dr. RAJENDRA P. BORALE
Dr. PRATIBHA D. PATOLE
Dr. GOVIND H. BALDE
Dr. SANJAY P. KHODKE
Dr. YOGESH H. WASU
Dr. SATISH M. SHINDE

Beaks in Darwin Finches

NIRALI PRAKASHAN
ADVANCEMENT OF KNOWLEDGE

A TEXT BOOK OF

EVOLUTIONARY BIOLOGY

ZOOLOGY

(Course : ZOO - 402) [CBCS]

S.Y.B.Sc.: Semester - IV : Paper - II

According to New Revised Syllabus from June 2019

Kavayitri Bahinabai Chaudhari

North Maharashtra University, Jalgaon.

Dr. RAJENDRA P. BORALE
M.Sc., Ph.D.
Associate Professor
Jaihind ET's ZB Patil College,
Dist. Dhule (M.S.)

Dr. SANJAY P. KHODKE
M.Sc., Ph.D.
Assistant Professor
Karmaveer A.M. Patil Arts,
& Kai. Annasaheb N.K. Patil Science College
Pimpalner, Tal.: Sakri, Dist. Dhule (M.S.)

Dr. PRATIBHA D. PATOLE
M.Sc., Ph.D.
Assistant Professor
BSSPM's Arts, Commerce &
Science College, Songir,
Dist.: Dhule (M.S.)

Dr. YOGESH H. WASU
M.Sc., Ph.D.
Assistant Professor
P.S.G.V.P.M.'s Arts, Science
& Commerce College, Shahada.
Dist. Nandurbar (M.S.)

Dr. GOVIND H. BALDE
M.Sc., Ph.D.
Assistant Professor
Gajmal Tulshiram Patil Mahavidyalaya
Dist.: Nandurbar

Dr. SATISH M. SHINDE
M.Sc., Ph.D.
Assistant Professor
Jaihind ET's ZB Patil College,
Dist. Dhule (M.S.)

Price : ₹ 45.00

NIRALI PRAKASHAN
ADVANCEMENT OF KNOWLEDGE

N0352

S.Y.B.Sc. : Evolutionary Biology (P-II) : Sem-IV
First Edition : February 2020
ISBN 978-93-89944-14-3
© : Authors
The text of this publication, or any part thereof, should not be reproduced or transmitted in any form or stored in any computer storage system or device for distribution including photocopy, recording, taping or information retrieval system or reproduced on any disc, tape, perforated media or other information storage device etc., without the written permission of Authors with whom the rights are reserved. Breach of this condition is liable for legal action.
Every effort has been made to avoid errors or omissions in this publication. In spite of this, errors may have crept in. Any mistake, error or discrepancy so noted and shall be brought to our notice shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher nor the authors or seller shall be responsible for any damage or loss of action to any one, of any kind, in any manner, therefrom.

Published By :
NIRALI PRAKASHAN
Abhyudaya Pragati, 1312, Shivaji Nagar,
Off J.M. Road, Pune – 411005
Tel - (020) 25512336/37/39, Fax - (020) 25511379
Email : niralipune@pragationline.com

POD

Printed By :
STAR COPIERS PVT. LTD.
Kumthekar Road, Sadashiv Peth,,
PUNE - 411 030,,
Tel - (020) 24479201.

DISTRIBUTION CENTRES

PUNE

Nirali Prakashan : 119, Budhwar Peth, Jogeshwari Mandir Lane,
Pune 411002, Maharashtra.
Tel : (020) 2445 2044, Mob. No. 9657703145.
Email: bookorder@pragationline.com,
niralilocal@pragationline.com

Nirali Prakashan : S. No. 28/27, Dhyari, Near Pari Company, Pune 411041
Tel : (020) 24690204 Fax : (020) 24690316
Email : dhyari@pragationline.com,
bookorder@pragationline.com

MUMBAI

Nirali Prakashan : 385, S.V.P. Road, Rasdhara Co-op. Hsg. Society Ltd.,
Girgaum, Mumbai 400004, Maharashtra
Tel : (022) 2385 6339 / 2386 9976, Fax : (022) 2386 9976
Email : niralimumbai@pragationline.com

DISTRIBUTION BRANCHES

JALGAON

Nirali Prakashan : 34, V. V. Golani Market, Navi Peth, Jalgaon 425001,
Maharashtra, Tel : (0257) 222 0395,
Mob : 94234 91860

KOLHAPUR

Nirali Prakashan : New Mahadvar Road, Kedar Plaza, 1st Floor Opp. IDBI Bank
Kolhapur 416 012, Maharashtra. Mob : 9850046155

NAGPUR

Nirali Prakashan : Above Maratha Mandir, Shop No. 3, First Floor,
Rani Jhanshi Square, Sitabuldi,
Nagpur 440012, Maharashtra Tel : (0712) 254 7129

DELHI

Nirali Prakashan : 4593/15, Basement, Aggarwal Lane, Ansari Road,
Daryaganj, Near Times of India Building, New Delhi 110002
Mob : 08505972553

BANGALURU

Nirali Prakashan : Maitri Ground Floor, Jaya Apartments, No. 99, 6th Cross,
6th Main, Malleswaram, Bangaluru 560 003, Karnataka
Mob : +91 9449043034
Email: niralibangalore@pragationline.com

Note: Every possible effort has been made to avoid errors or omissions in this book. In spite this, errors may have crept in. Any type of error or mistake so noted, and shall be brought to our notice, shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher, nor the author or book seller shall be responsible for any damage or loss of action to any one of any kind, in any manner, therefrom. The reader must cross check all the facts and contents with original Government notification or publications.

New Revised Syllabus (CBCS Pattern) of
KAVAYITRI BAHINABAI CHAUDHARI
NORTH MAHARASHTRA UNIVERSITY
S.Y. B.Sc. : Semester-IV

KBC
NMU

GENETICS

(ZOOLOGY-PAPER-I : ZOO-401)

Dr. RAJENDRA P. BORALE
Dr. YOGESH H. WASU
Dr. YUSUF E. PATEL
Dr. GOVIND H. BALDE

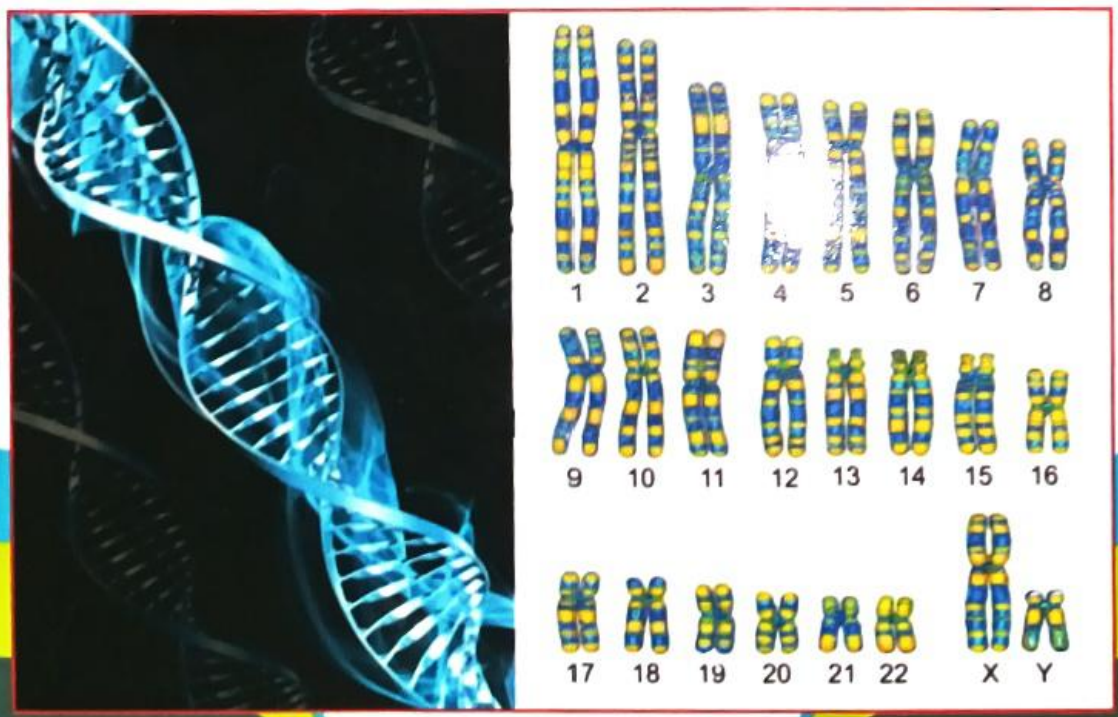

NIRALI PRAKASHAN
ADVANCEMENT OF KNOWLEDGE

A TEXT BOOK OF

GENETICS

ZOOLOGY

(Course : ZOO - 401) [CBCS]

S.Y.B.Sc.: Semester - IV : Paper - I

According to New Revised Syllabus from June 2019

Kavayitri Bahinabai Chaudhari

North Maharashtra University, Jalgaon.

Dr. RAJENDRA P. BORALE
M.Sc., Ph.D.
Associate Professor
Jaihind ET's ZB Patil College,
Dist. Dhule (M.S.)

Dr. YUSUF E. PATEL
M.Sc., Ph.D.
Assistant Professor
Iqra's H.J. Thim College,
Mehrun, Dist. Jalgaon

Dr. YOGESH H. WASU
M.Sc., Ph.D.
Assistant Professor
P.S.G.V.P.M.'s Arts, Science
& Commerce College, Shahada.
Dist. Nandurbar (M.S.)

Dr. GOVIND H. BALDE
M.Sc., Ph.D.
Assistant Professor
Gajmal Tulshiram Patil Mahavidyalaya
Dist.: Nandurbar

Price : ₹ 60.00

NIRALI PRAKASHAN
ADVANCEMENT OF KNOWLEDGE

N0351

S.Y.B.Sc. : Genetics (P-I) : Sem-IV
First Edition : February 2020
ISBN 978-93-89944-18-1
© : Authors
The text of this publication, or any part thereof, should not be reproduced or transmitted in any form or stored in any computer storage system or device for distribution including photocopy, recording, taping or information retrieval system or reproduced on any disc, tape, perforated media or other information storage device etc., without the written permission of Authors with whom the rights are reserved. Breach of this condition is liable for legal action.
Every effort has been made to avoid errors or omissions in this publication. In spite of this, errors may have crept in. Any mistake, error or discrepancy so noted and shall be brought to our notice shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher nor the authors or seller shall be responsible for any damage or loss of action to any one, of any kind, in any manner, therefrom.

Published By :
NIRALI PRAKASHAN
Abhyudaya Pragati, 1312, Shivaji Nagar,
Off J.M. Road, Pune – 411005
Tel - (020) 25512336/37/39, Fax - (020) 25511379
Email : niralipune@pragationline.com

POD

Printed By :
STAR COPIERS PVT. LTD.
Kumthekar Road, Sadashiv Peth,,
PUNE - 411 030,,
Tel - (020) 24479201.

DISTRIBUTION CENTRES

PUNE

Nirali Prakashan : 119, Budhwar Peth, Jogeshwari Mandir Lane,
Pune 411002, Maharashtra.
Tel : (020) 2445 2044, Mob. No. 9657703145.
Email: bookorder@pragationline.com,
niralilocal@pragationline.com

Nirali Prakashan : S. No. 28/27, Dhyari, Near Pari Company, Pune 411041
Tel : (020) 24690204 Fax : (020) 24690316
Email : dhyari@pragationline.com,
bookorder@pragationline.com

MUMBAI

Nirali Prakashan : 385, S.V.P. Road, Rasdhara Co-op. Hsg. Society Ltd.,
Girgaum, Mumbai 400004, Maharashtra
Tel : (022) 2385 6339 / 2386 9976, Fax : (022) 2386 9976
Email : niralimumbai@pragationline.com

DISTRIBUTION BRANCHES

JALGAON

Nirali Prakashan : 34, V. V. Golani Market, Navi Peth, Jalgaon 425001,
Maharashtra, Tel : (0257) 222 0395,
Mob : 94234 91860

KOLHAPUR

Nirali Prakashan : New Mahadvar Road, Kedar Plaza, 1st Floor Opp. IDBI Bank
Kolhapur 416 012, Maharashtra. Mob : 9850046155

NAGPUR

Nirali Prakashan : Above Maratha Mandir, Shop No. 3, First Floor,
Rani Jhanshi Square, Sitabuldi,
Nagpur 440012, Maharashtra Tel : (0712) 254 7129

DELHI

Nirali Prakashan : 4593/15, Basement, Aggarwal Lane, Ansari Road,
Daryaganj, Near Times of India Building, New Delhi 110002
Mob : 08505972553

BANGALURU

Nirali Prakashan : Maitri Ground Floor, Jaya Apartments, No. 99, 6th Cross,
6th Main, Malleswaram, Bangaluru 560 003, Karnataka
Mob : +91 9449043034
Email: niralibangalore@pragationline.com

Note: Every possible effort has been made to avoid errors or omissions in this book. In spite this, errors may have crept in. Any type of error or mistake so noted, and shall be brought to our notice, shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher, nor the author or book seller shall be responsible for any damage or loss of action to any one of any kind, in any manner, therefrom. The reader must cross check all the facts and contents with original Government notification or publications.

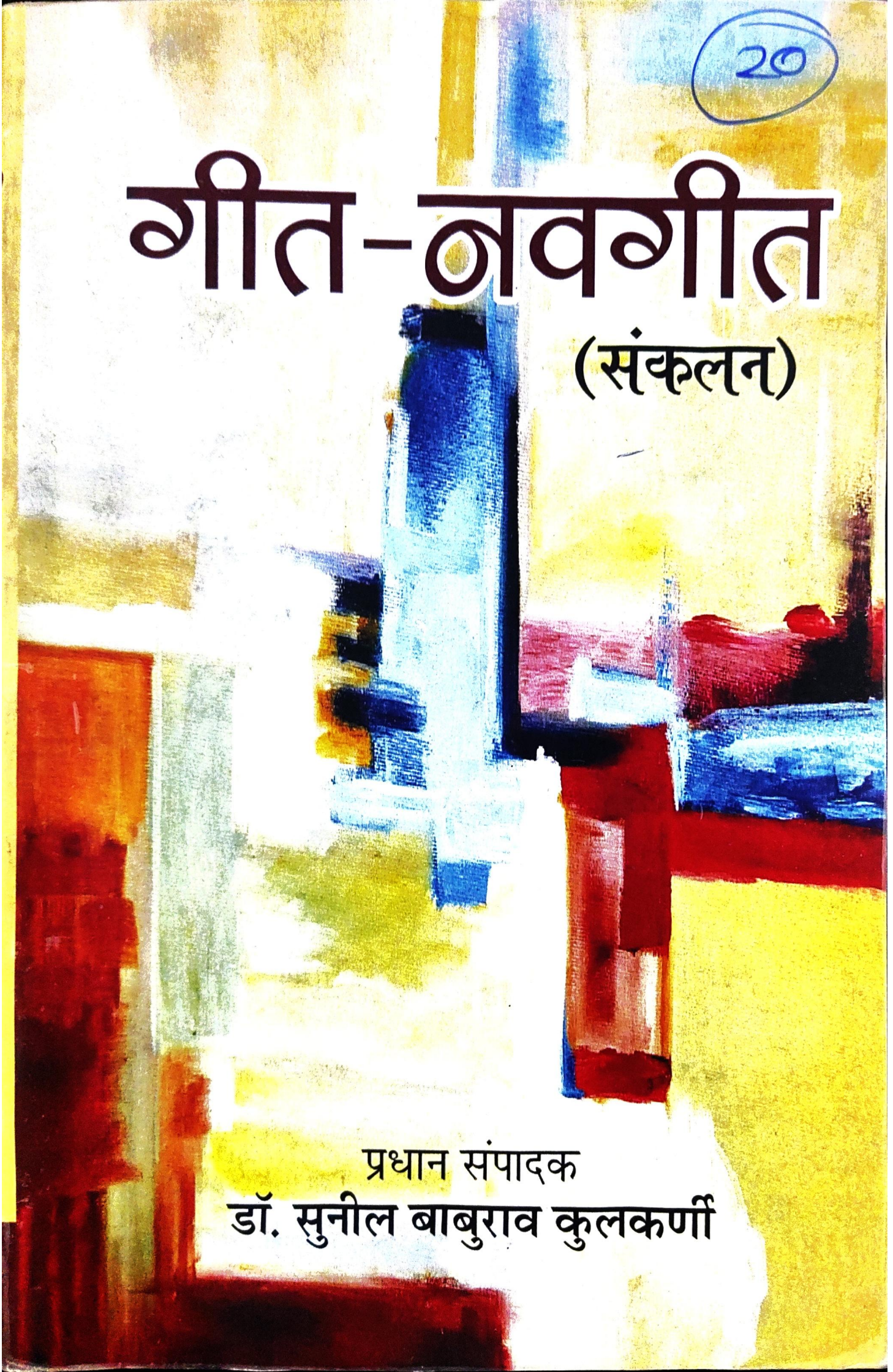

20

गीत-नवगीत

(संकलन)

प्रधान संपादक
डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी

87340 140L

गीत-नवगीत

(संकलन)

AJMAL TULSHIRAM PA... LIBRARY ... COLLEGE ...
891.438
KUL
87340

प्रधान सम्पादक
डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी
अध्यक्ष हिन्दी अध्ययन मण्डल
कवयित्री बहिणाबाई चौधरी, उत्तर महाराष्ट्र, विश्वविद्यालय, जलगाँव

सम्पादक मण्डल

डॉ. श्रीराम परिहार
डॉ. शीतला प्रसाद दुबे
डॉ. संजय शर्मा
डॉ. संजय रणखांबे
श्री आमोद माहेश्वरी
डॉ. जोगेन्द्र सिंह बिसेन
डॉ. कामिनी तिवारी
डॉ. जयश्री गावित
डॉ. सुनीन पानपाटील
कुमारी पाण्डेय करिश्मा
डॉ. मधु खराटे
डॉ. जे. व्ही. पाटील
डॉ. महेन्द्र रघुवंशी
डॉ. आर. के. जाधव
कुमारी आहिल्या चेतना

यश पब्लिकेशंस
दिल्ली-110032

ISBN : 978-93-81490-98-2

प्रथम संस्करण : 2019

© सुनील बाबुराव कुलकर्णी

मूल्य : ₹ 140/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलैक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुर्नलिखित प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032 (भारत)

विक्रय कार्यालय
4806/24, भरतराम रोड़
अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

संपर्क : 011-40018100
ई-मेल : yashpublishersprivatelimited@gmail.com
वेबसाइट : www.yashpublication.co.in

डिस्ट्रीब्यूटर : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
Available at : amazon.in, flipkart.com

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी

संदर्भ ग्रंथ :

- कबीर और तुकाराम के काव्य में प्रगतिशील चेतना
- समकालीन साहित्य विमर्श
- सामाजिक समरसता के अग्रदूत संत कवि
- भाषिक संप्रेषण

संपादित ग्रंथ :

- संत साहित्य की आधुनिक अवधारणाएँ
- राष्ट्रभाषा हिंदी : कितनी सही कितनी प्रेरक
- भारतीय भक्ति साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक समरसता
- हिन्दी साहित्य अधुनातन आयाम
- कथेतर गद्य विधाएँ
- श्रेष्ठ हिन्दी एकांकी
- गीत-नवगीत संकलन

अनूदित ग्रंथ/काव्य संकलन : (मराठी से हिन्दी)

- भारतीय गाँव : अर्थ एवं राजनीति
- जनसंख्या अध्ययन : मूल्यांकन अनुसंधान
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय : व्यक्तित्व के विविध पहलू
- ढोहता हूँ कविता की पालकी
- दमन

सम्प्रति :

अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मंडल तथा हिन्दी विभागाध्यक्ष, कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव।
भ्रमणध्वनी : 9422217600
ई-मेल : sbkulkarninmu.ac.in

नवगीत जीवनानुभूति-सम्पन्न, आधुनिक धरातल पर अभिव्यक्त काव्य-धारा है। जब अनुभूति की बात करते हैं, तो इसे अनुभूति या मानवीय अनुभवों की एक अनवरत शृंखला के रूप में देखना अपेक्षित है। नवगीत में "गीत" काव्य के संदर्भ और बाद में काव्य की धारा विशेष की संज्ञा के रूप में है। "नव" शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है। गीत को अपनी परम्परा से जोड़कर किन्तु नवीन रूप में देखने, अनुभव करने ओर प्रभाव छोड़ने की स्थितियों को स्पष्टतः दर्शाने के उद्देश्य से इसका विशेषण के बतौर प्रयोग किया गया। "नव" शब्द गीत के साथ जुड़कर समय के प्रवाह में शालिग्राम हो गया और विशेषण संदर्भित अर्थ नयी गीति-धारा की संज्ञा के पक्ष में रूढ़ हो गया। वर्तमान में "नवगीत" एक शब्द हो गया है। एक ऐसा शब्द जो संज्ञा के रूप में उपयोग होता हुआ अपने अर्थ में लगभग एक की काव्य-धारा के साहित्यिक और सांस्कृतिक आयामों को समेटे हुए हैं।

–डॉ. श्रीराम परिहार
खण्डवा (मध्यप्रदेश)

232 ते 238
9

श्रेष्ठ हिन्दी एकांकी

प्रधान सम्पादक
डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी

85419 1101

श्रेष्ठ हिन्दी एकांकी

प्रतिनिधि रचनाएँ

TULSHIRAM PATIL LIBRARY
891.432 KUL
85419

प्रधान सम्पादक

डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी

अध्यक्ष हिन्दी अध्ययन मंडल
कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव

सम्पादक मंडल

डॉ. श्रीराम परिहार	डॉ. जोगेन्द्रसिंह बिसेन	डॉ. मधु खराटे
डॉ. शीतलाप्रसाद दुबे	डॉ. कामिनी तिवारी	डॉ. जे.व्ही. पाटील
डॉ. संजय शर्मा	डॉ. जयश्री गावित	डॉ. महेन्द्र रघुवंशी
डॉ. संजय रणखांबे	डॉ. सुनील पानपाटील	डॉ. आर.के. जाधव
श्री आमोद महेश्वरी	कु. योगिता पाटील	कु. मुक्ती प्रभात जैन

राधाकृष्ण प्रकाशन

TULSHIRAM PATIL LIBRARY

ISBN : 978-81-8361-926-4

श्रेष्ठ हिन्दी एकांकी

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पहला संस्करण : 2019

मूल्य : ₹110

प्रकाशक

राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

जी-17, जगतपुरी, दिल्ली-110 051

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006

पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001

36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

वेबसाइट : www.radhakrishnaprakashan.com

ई-मेल : info@radhakrishnaprakashan.com

मुद्रक

बी.के. ऑफसेट

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

SHRESHTH HINDI EKANKI

Edited by Dr. Sunil Baburao Kulkurni

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

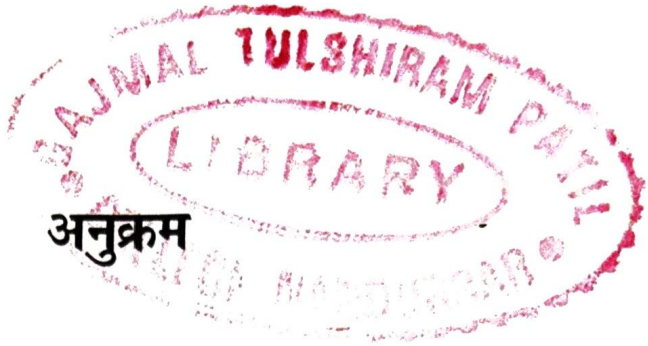

अनुक्रम

85419

दो शब्द 7

हिन्दी एकांकी : एक रंग यात्रा 9

डॉ. रामकुमार वर्मा **15**

दीप-दान 17

विष्णु प्रभाकर **38**

माँ 40

जगदीशचन्द्र माथुर **52**

भोर का तारा 54

उदयशंकर भट्ट **67**

नए मेहमान 69

मोहन राकेश **81**

बहुत बड़ा सवाल 83

भारतभूषण अग्रवाल **109**

महाभारत की एक साँझ 110

उपेंद्रनाथ अश्क **120**

तौलिए 122

भुवनेश्वर **141**

ताँबे के कीड़े 143

ममता कालिया **154**

जान से प्यारे 155

तेजपाल चौधरी **164**

छोटी मछली बड़ी मछली 166

85419

दो शब्द

प्रिय छात्रो तथा पाठको,

सस्नेह नमस्कार!

कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव के हिन्दी अध्ययन मंडल द्वारा सम्पादित पाठ्यपुस्तक 'श्रेष्ठ हिन्दी एकांकी' आपके सम्मुख रखते हुए मन ही मन में हम परम हर्ष का अनुभव कर रहे हैं। रुचि आधारित साख पद्धति (CBCS) के अनुसार बी.ए. द्वितीय वर्ष के विद्याशाखा निहाय मुख्यांश पाठ्यक्रम (Core Course) पर चर्चा करते समय छात्रों की रुचि और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तथा उनका वैचारिक स्तर, उनकी क्षमताओं को केन्द्र में रखकर; दृक और श्राव्य दोनों माध्यमों में अपना प्रभाव निर्माण करने वाली 'एकांकी विधा' को अध्ययनार्थ रखा जाए यह निर्णय लिया गया।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में तकनीकी साधनों में हुई क्रान्ति के परिणामस्वरूप नाटक एवं एकांकी के मंचन में आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं; और प्रायः नित्य-प्रति हो रहे हैं। इसी के चलते इन दिनों एकांकी विधा तीव्र गति से विकसित होती दिखाई दे रही है। नाटक एवं एकांकी विधा के विकास की तुलना इन दिनों प्रायः क्रिकेट के विकास के साथ की जाती है। एक जमाने में क्रिकेट जिस प्रकार पाँच दिनों में खेला जाता था वैसे ही नाटक के चार या पाँच अंक होते थे। लेकिन कालांतर बाद में क्रिकेट जिस प्रकार वन डे और ट्वेंटी-ट्वेंटी में सिमटता गया वैसे ही चार या पाँच अंकों वाला नाटक भी एक अंक या एकांकी में सिमटता चला जा रहा है। यही कारण है कि आज भारतीय एवं पाश्चात्य जगत के क्रिकेट विश्व में जिस प्रकार ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट का सर्वत्र बोलबाला है, उसी प्रकार भारतीय एवं पाश्चात्य देशों के नाट्य जगत में एक अंक वाली एकांकी विधा का सर्वत्र बोलबाला दिखाई देता है। ऐसी प्रभावकारी विधा को पाठ्यक्रम में रखकर छात्रों के मन और मस्तिष्क को प्रभावित करने का यह एक लघु प्रयास है।

इन दिनों दिन-ब-दिन बिगड़ता जा रहा सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक सौहार्द, दिन-ब-दिन मन्द पड़ रहा राष्ट्रीय अस्मिता का स्वर, भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप उपजी भौतिक चकाचौंधता, उभोगक्तावाद की प्रवृत्ति, जानलेवा प्रतिस्पर्धा का भाव, पारिवारिक विघटन, मनुष्य जीवन में उत्पन्न हो रही विसंगतियाँ, समरसता,संवेदनशीलता

इन मानवीय मूल्यों का दिन-ब-दिन हो रहा पतन इन बातों को ध्यान में रखकर स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में ऐसी एकांकी छात्रों के अध्ययनार्थ रखी गई हैं जिन्हें पढ़कर छात्रों में उपर्युक्त मुद्दों के प्रति आस्था का भाव निर्माण हो।

डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित एकांकी 'दीपदान', विष्णु प्रभाकर की 'माँ', जगदीशचन्द्र माथुर की 'भोर का तारा', उदयशंकर भट्ट की 'नए मेहमान', मोहन राकेश की 'बहुत बड़ा सवाल' ममता कालिया की 'जान से प्यारे', भारतभूषण अग्रवाल की 'महाभारत की एक साँझ', उपेन्द्रनाथ अश्क की 'तौलिए', भुवनेश्वर की 'ताँबे के कीड़े' और डॉ. तेजपाल चौधरी की 'छोटी मछली बड़ी मछली' आदि एकांकिका प्रमुख हैं जिनके माध्यम से साहस, धैर्य, सेवा एवं बलिदान का भाव, माँ की दृढ़ निष्ठा तथा संघर्ष, जनहित तथा राष्ट्रीय चेतना, निम्न मध्यवर्गीय जीवन में अन्तर्विरोधों के परिणामस्वरूप उपजा स्वार्थ केन्द्रित आतिथ्य का भाव, मध्यवर्गीय जीवन कीं स्वप्नदर्शी प्रवृत्ति तथा संघर्षी वृत्ति का अभाव, मानवीय सम्बन्धों में व्याप्त विसंगतियाँ, महाभारत के प्रमुख पात्र दुर्योधन की अन्तर्व्यथा, मध्यवर्ग तथा उच्च मध्यवर्ग के बीच की संस्कारगत टकराहट आदि बातों को उजागर करने का प्रयास किया है। आशा एवं विश्वास है कि इन एकांकियों को पढ़ने के उपरान्त छात्र जहाँ एक ओर अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास साधने में सफल सिद्ध होंगे वहीं दूसरी ओर नौकरी पाने में और उसे प्रभावी पद्धति से करने में सफल सिद्ध होंगे। छात्रों तथा पाठकों से निवेदन हैं किंवा पाठ्यपुस्तक को पढ़ने के उपरात पुस्तक के सन्दर्भ में अपनी प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित कर सहयोग प्रदान करें।

धन्यवाद!

डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी
अध्यक्ष हिंदी अध्ययन मंडल,
कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र
विश्वविद्यालय जलगाँव, (महाराष्ट्र)
ई-मेल : sunilkulkarni38@gmail.com

LIBRARY
85419

हिन्दी एकांकी : एक रंग यात्रा

समय की तेज रफ्तार के साथ घड़ी की सुइयों के साथ चलती वर्तमान जिन्दगी ने साहित्य की हर विधा को आकार में लघु लेकिन प्रभाव में अत्यधिक तेज बनाया है। एकांकी उन्हीं में से एक है। वह नाटक का लघु रूप नहीं है, अपने-आपमें एक स्वतंत्र नाट्यानुभव है, जो लघु है परन्तु 'स्वतःपूर्ण' है। डॉ. दशरथ ओझा ने स्पष्ट किया है : "आज के एकांकी नाटकों का विश्लेषण करके हम कह सकते हैं कि जो नाटक एक अंक में समाप्त होने वाला, एक सुनिश्चित लक्ष्य वाला, एक ही घटना, एक ही परिस्थिति, एक ही समस्या वाला हो, जिसके प्रवेश में कौतूहल और वेग, गति में विद्युत-सी वक्रता और तेजी, विकास में एकाग्रता और आकस्मिकता के साथ चरम सीमा तक पहुँचने की व्यग्रता हो और जिसका पर्यवसान चरमसीमा पर ही प्रभाव की तीव्रता के साथ हो जाता हो, जिसमें प्रासंगिक कथाओं का प्रायः निषेध, घटनाओं की विविधता का निवारण तथा चारित्रिक प्रस्फुटन में आदि, मध्य और अवसान का वर्जन हो, उसे एकांकी कहना चाहिए।"

तात्पर्य यह है कि जिस नाटक में नायक के जीवन के एक ही लक्ष्य को प्रमुखता देने के लिए उत्तेजक, सूचक अथवा प्रभाव-व्यंजक पात्रों की सहायता से घटनाओं तथा भाव-विचारों की तहें खोलता हुआ हमारी जिज्ञासा को उभारकर या तो सन्तुष्ट कर देता है अथवा किसी उलझन में ही छोड़ देता है, वह एक अंक में समाप्त होनेवाला नाटक एकांकी है।

हिन्दी एकांकी के जन्म के विषय में विद्वानों में मतभेद रहा है। अन्य आधुनिक गद्य विधाओं की भाँति एकांकी भी पाश्चात्य साहित्य की देन मानने वाला एक वर्ग है। प्रो. अमरनाथ गुप्त, प्रो. प्रकाशचन्द्र गुप्त तथा डॉ. एस.पी. खत्री इस वर्ग के उल्लेखनीय विद्वान रहे हैं। प्रो. अमरनाथ का कथन है : "एकांकी नाटक हिन्दी में सर्वथा नवीनतम कृति है। इसका जन्म हिन्दी साहित्य में अंग्रेजी के प्रभाव से कुछ ही वर्ष पूर्व हुआ है।" विद्वानों का दूसरा वर्ग हिन्दी एकांकी का उद्गम संस्कृत नाट्य साहित्य से मानता है। डॉ. सरनाभा सिंह, डॉ. ललित प्रसाद सुकुल तथा सदगुरुशरण अवस्थी इस वर्ग के प्रमुख विद्वान रहे हैं। डॉ. सरनाभा सिंह का मत है : "यह मानना नितान्त भ्रामक होगा कि हिन्दी एकांकी के सामने कोई भारतीय आदर्श न था।"

आवरण परिकल्पना : राधाकृष्ण स्टूडियो

राधाकृष्ण प्रकाशन

नाटक

₹110

9 788183 619264

www.radhakrishnaprakashan.com

235 ते 236

10

RAJMAL LUKHICHAND PATIL
COLLEGE NANDURBAR

कथेतर गद्य विधाएँ

प्रतिनिधि रचनाएँ

प्रधान सम्पादक

डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी

85406 601

कथेतर गद्य विधाएँ

प्रतिनिधि रचनाएँ

85406

891.434
KUL

प्रधान सम्पादक

डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी

अध्यक्ष हिन्दी अध्ययन मण्डल

कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव

KAMAL TULSHIRAM PATIL
LIBRARY

वाणी प्रकाशन

सम्पादक मण्डल

डॉ. श्रीराम परिहार
डॉ. शीतला प्रसाद दुबे
डॉ. संजय शर्मा
डॉ. संजय रणखांबे
श्री आमोद माहेश्वरी

डॉ. जोगेन्द्र सिंह बिसेन
डॉ. कामिनी तिवारी
डॉ. जयश्री गावित
डॉ. सुनील पानपाटील
कु. योगिता पाटील

डॉ. मधु खराटे
डॉ. जे. व्ही. पाटील
डॉ. महेन्द्र रघुवंशी
डॉ. आर. के. जाधव
कु. मुक्ती प्रभात जैन

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710
शाखाएँ
अशोक राजपथ, पटना 800 004, बिहार
कॉफ़ी हाउस कैम्पस, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211 001, उत्तर प्रदेश
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001, महाराष्ट्र
सुल्तानिया रोड, नजदीक पानी टंकी, मोतिया पार्क, भोपाल 462 001, मध्य प्रदेश
www.vaniprakashan.in
marketing@vaniprakashan.in
sales@vaniprakashan.in

KATHETAR GADYA VIDHAYEN
Pratinidhi Rachnayen
Edited by Dr. Sunil Baburao Kulkarni

ISBN : 978-93-89012-82-8

© सुरक्षित

प्रथम संस्करण 2019

मूल्य : ₹ 60

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सिटी प्रेस, दिल्ली-110 095 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

भूमिका

85403

कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव के मानविकी विज्ञान विद्याशाखा के अन्तर्गत बी.ए. द्वितीय वर्ष के मुख्यांश पाठ्यक्रम हिन्दी हेतु हिन्दी अध्ययन मण्डल द्वारा सम्पादित पाठ्यपुस्तक 'कथेतर गद्य विधाएँ (प्रतिनिधि रचनाएँ)' प्रस्तुत करते हुए हम परम हर्ष एवं आनन्द का अनुभव कर रहे हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नयी दिल्ली तथा महाराष्ट्र राज्य शासन की ओर से प्रस्तावित रुचि आधारित पाठ्यक्रम (CBCS) के अनुसार स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रमों की तथा पाठ्यपुस्तकों की संरचना में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है; और हो रहा है। इस परिवर्तित परिस्थिति के कारण बहुत से परम्परागत विषय या तो विनष्ट हो रहे हैं या नया चोला पहनकर आधुनिक या अत्याधुनिक रूपों में अपने आपको ढालने का प्रयास कर रहे हैं। कथेतर गद्य भी उन्हीं में से एक है। एक समय था जब हम यह समझते थे कि साहित्य के प्रायः दो ही रूप होते हैं—गद्य और पद्य। पाठशाला से लेकर स्नातक स्तर तक की शिक्षा को ग्रहण करते समय इन दोनों रूपों से ही छात्र परिचित हो जाते, पर अब वह स्थिति नहीं रही है। केन्द्रीय बोर्ड के छात्र जहाँ सातवीं-आठवीं की कक्षाओं में ही कथेतर गद्य विधाओं से परिचित हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर आईसीएसई बोर्ड के छात्र चौथी कक्षा से ही कथेतर गद्य की विधाओं से परिचित हो रहे हैं। विश्वविद्यालयी स्तर पर मानविकी विज्ञान विद्याशाखा में यह क्रम देरी से ही क्यों न हो, परन्तु आरम्भ हो रहा है इस बात की हमें खुशी हो रही है।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के माध्यम से कथेतर गद्य विधा की निबन्ध, ललित निबन्ध, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज, यात्रा-वर्णन, व्यंग्य, डायरी, साक्षात्कार, सम्बोधन और आलेख विधाओं की प्रतिनिधि रचनाओं से विद्यार्थियों को परिचित कराने का प्रयास किया जा रहा है। जिनमें वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित निबन्ध 'राष्ट्र का स्वरूप', डॉ. विश्वास पाटील, द्वारा लिखित ललित निबन्ध 'बनोगे समर्पित तो रहोगे सुरक्षित।' अमृतलाल नागर

RAJMAL TULSHIRAM PATIL
LIBRARY

जी द्वारा लिखित संस्मरण 'तीस बरस का साथी : रामविलास शर्मा', रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित रेखाचित्र 'रजिया', पाण्डेय बेचन शर्मा द्वारा लिखित जीवनी का अंश 'धरती और धान', महात्मा गाँधी की आत्मकथा का अंश 'चोरी और प्रायश्चित्त', रांगेय राघव द्वारा लिखित रिपोर्ताज 'अदम्य जीवन', अज्ञेय द्वारा लिखित यात्रा वर्णन 'पतझर एक पात', शंकर पुणतांबेकर द्वारा लिखित व्यंग्य 'एक गोप कक्ष', हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखित डायरी का अंश 'प्रवास की डायरी', कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. सुधाकर शेंडगे तथा डॉ. विश्वाधार देशमुख द्वारा लिया डॉ. वेदकुमार वेदांलकार जी का साक्षात्कार, स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा लिखित सम्बोधन 'युवाओं से', तथा सुप्रसिद्ध साहित्यकार मृदुला सिन्हा द्वारा भारतवर्ष के पूर्व प्रधानमन्त्री स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी जी की पावन स्मृतियों पर लिखित लेख 'साहित्य-रस में पगा राजनेता' आदि प्रमुख हैं।

पाठ्यपुस्तक में संकलित रचनाओं का चयन करते समय जहाँ एक ओर छात्रों के बौद्धिक-मानसिक स्तर, समय की आवश्यकता, रोजगार की सम्भावना तथा छात्रों के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास हेतु आवश्यक तत्त्वों का ध्यान रखा गया है। वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय अस्मिता, भारतीय संस्कृति, मूल्य, एवं रूढ़ि परम्परा, सामाजिक सौहार्द और संवेदनशीलता, धार्मिक समन्वय एवं परधर्म सहिष्णुता, परस्पर व्यवहार एवं कौशल विकास, त्याग और समर्पण का भाव, पूर्वाग्रह के भाव से मुक्ति, साहित्य के अधुनातन आयामों से साक्षात्कार आदि बातों का न केवल ध्यान रखा गया है बल्कि यही बातें पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित रचनाओं के केन्द्र में रही हैं। आशा और विश्वास है कि पाठ्यपुस्तक छात्रों तथा पाठकों की पसन्द की कसौटी पर न केवल खरी सिद्ध होगी; बल्कि फलेगी, फूलेगी, निखरेगी और आसमान में चार चाँद लगायेगी।

डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मण्डल
कवयित्री बहिणाबाई चौधरी
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय,
जलगाँव, महाराष्ट्र
सम्पर्क : 9422217600

अनुक्रम

हिन्दी कथेतर गद्य विधाओं का विकासात्मक परिचय : **डॉ. संजय रणखांबे**		9
वासुदेवशरण अग्रवाल	• *राष्ट्र का स्वरूप (निबन्ध)*	31
विश्वास पाटील	• *बनोगे समर्पित तो रहोगे सुरक्षित! (ललित निबन्ध)*	37
अमृतलाल नागर	• *तीस बरस का साथी : रामविलास शर्मा (संस्मरण)*	45
रामवृक्ष बेनीपुरी	• *रजिया (रेखाचित्र)*	65
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	• *धरती और धान (जीवनी अंश)*	75
महात्मा गाँधी	• *चोरी और प्रायश्चित्त (आत्मकथा अंश)*	82
रांगेय राघव	• *अदम्य जीवन (रिपोर्ताज)*	88
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'	• *पतझर एक पात (यात्रा वर्णन)*	100
शंकर पुणतांबेकर	• *एक गोप कक्ष (व्यंग्य)*	104
हरिवंशराय बच्चन	• *प्रवास की डायरी (डायरी)*	109
सुधाकर शेंडगे/विश्वाधार देशमुख	• *साक्षात्कार : वेदकुमार वेदालंकार (साक्षात्कार)*	120
स्वामी विवेकानन्द	• *सम्बोधन : युवाओं से (सम्बोधन)*	140
मृदुला सिन्हा	• *साहित्य-रस में पगा राजनेता (आलेख)*	148

ISBN : 978-93-89012-82-8

वाणी प्रकाशन

www.vaniprakashan.in

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से
Vani Prakashan's signature motif is created by
Artist Maqbool Fida Husain

S.Y.B.Sc. ▪ CH - 302

KAVAYITRI BAHINABAI CHAUDHARI
NORTH MAHARASHTRA UNIVERSITY

SEM - III | CBCS PATTERN

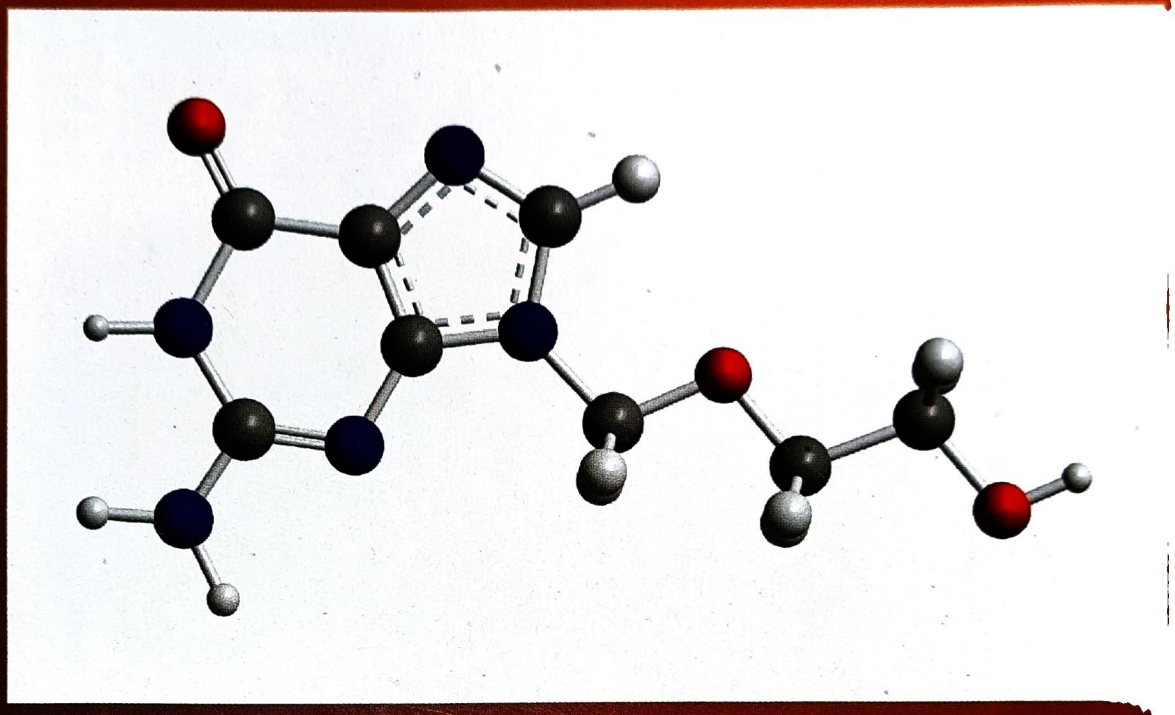

ORGANIC AND INORGANIC CHEMISTRY

Dr. M. K. Patel | M. S. Patil | M. T. Chaudhari
Dr. Mrs. P. S. Sathe | Dr. M. R. Patil

Prashant

CHEMISTRY

Prashant Publications

© Reserved

ORGANIC AND INORGANIC CHEMISTRY

S.Y.B.Sc. (CBCS) | CH-302 | Sem III

Publisher and Printer
Prashant Publications
3, Pratap Nagar, Shri Sant Dnyaneshwar Mandir Road,
Near Nutan Maratha College, Jalgaon 425001.

. Phone . Website . E-mail
(0257) 2235520, 2232800
www.prashantpublications.com
prashantpublication.jal@gmail.com

. First Edition . ISBN . Type Setting
July. 2019
978-93-88769-87-7
Prashant Publication

Price : ₹ 115/-

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying (xerox copy), recording or otherwise, without the prior permission.

ऐतिहासिक परिपेक्ष में
भारतीय महिला
Indian Women in Historical Perspective

डॉ. सूर्यकांत कापशीकर

ऐतिहासिक परिपेक्ष में भारतीय महिला

Indian Women in Historical Perspective

Editor : Dr. Suryakant Kapshikar

Published by :
Dr. Dhanraj Shate
Principal
Yashoda Girls' Arts & Commerce College
Sneh Nagar, Nagpur M.S. (India)
Accredited B++ with 2.82 CGPA for First Cycle by NAAC
Tel. : 0712-2290637 Fax No. 0712- 2290368
Email : ygc.ngp@rediffmail.com
Website : www.ygcngp.org

Copyright©
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise with the prior permission of the Editor.

The papers included in this publication have been directly reproduced with minimum editorial intervention, from the files sent by the respective authors. The responsibility for facts states, opinions,expressed or conclusion reached and plagiarism if any, in this book is entirely that of the authors/contributors.

The Editor, Advisory Committee, Editorial Board Members & Peer Reviewed Committee Printer bears no responsibility for them; whatsoever.

In case of any dispute all legal matter are to be settle under Nagpur Jurisdiction only

Edition : 2019

ISBN - 978-81-920781-6-8

Price : 375/-

Designed & Printed by
Dinesh Graphic
Trimurti Nagar, Nagpur-440022
M.9422119631/9765762211

१९. फुले दाम्पत्यांची प्रेरणा सत्यस्वरुप सगुणाबाई क्षिरसागर ८७
डॉ. निशांत भिमरावजी रोंडे
२०. सावित्रीबाई फुले सामाजिक क्षेत्रातील योगदान ९३
डॉ. भारत एम. राठोड
२१. ताराबाई शिंदे : एक स्त्री समाजसुधारक १००
डॉ. प्रकाश सुर्यभान सोनक
२२. पंडिता रमाबाई : व्यक्ती व कार्य १०६
डॉ नितीन उल्हासराव सराफ
२३. मनुताई बापट : अकोल्यातील स्त्री शिक्षणाच्या आद्य प्रणेत्या ११२
डॉ. अभिलाशा राऊत
२४. कस्तुरबा गांधी : व्यक्तित्त्व व योगदान ११८
डॉ. मोहन राजाराम कापगते
२५. कस्तूरबा गांधी का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन मे योगदान १२७
डॉ. शहनाज रफिक शेख
२६. जानकीदेवी बजाज यांचे भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील योगदान १३०
डॉ. कैलाश फुलमाळी
२७. स्वतंत्रता आंदोलन में सुभद्राकुमारी चौहान का योगदान १३४
डॉ. आशा गोहे
२८. १९२३ के नागपूर झेन्डा आन्दोलन में सुभद्राकुमारी चौहान का योगदान १३१
डॉ. रूपेश एम. मेश्राम
२९. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महादेवी वर्मा जी का योगदान १४८
डॉ सरोज एस घोड़ेश्वर
३०. दूर्गाताई जोशी याची स्वातंत्र्य संग्रामातील कामगिरी १४६
प्रा. रेखा लालाजी मेश्राम
३१. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अरूणा आसफ अली का योगदान १५०
डॉ. ज्योती वसंत खडसे
३२. डॉ. सुशीला नायर यांचे सामाजिक क्षेत्रातील योगदान १५६
डॉ. रफिक बा. शेख
३३. मंजुळामातेचे तुकडोजी महाराजांवरील संस्कार १५१
डॉ. भारत व्ही. नखाते
३४. महामाता त्यागमूर्ती रमाई १६४
डॉ. दीपाली दि.भावे
३५. भारतीय इतिहासातील उपेक्षीत स्त्री : डॉ. सविता आंबेडकर १६१
प्रा. प्रफुल एम. राजुरवाडे
३६. आंबेडकरी चळवळीत शांताबाई दाणी यांचे योगदान १७६
डॉ. आर.यु.हिरे
३७. मदर तेरेसा यांचे सामाजिक कार्य १७९
डॉ. भोज छाया भास्कर

फुले दाम्पत्यांची प्रेरणा सत्यस्वरुप सगूणाबाई क्षिरसागर

डॉ. निशांत भिमरावजी शेंडे
पदवी व पदव्युत्तर इतिहास विभाग,
जी.टी. पाटील वरिष्ठ महाविद्यालय, नंदुरबार जि. नंदुरबार

प्रस्तावना

महात्मा जोतीराव फुल्यांच्या व्यक्तित्वाची जडण-जडण विविध ग्रंथाच्या पठनातून, थॉमस पेन लिखीत मानवी हक्क (Human Rights), मार्टीन ल्यूथर, जॉर्ज वॉशिग्टन, नेपोलियन बोनापार्ट इ. क्षेष्ठ व्यक्तीच्या चरीत्र वाचनातून, सभोवतालच्या परिस्थितीतून व सगूणाबाई क्षिरसागर या सत्यस्वरुप महिलेच्या लोककल्याणकारी विचार व मानवतावादी संस्कारातून खऱ्या अर्थाने आली. सगूणाबाई क्षिरसागर ही स्त्री निश्चितच फुले दाम्पत्यांच्या प्रेरणास्त्रोत होत्या. मनुष्यसेवा हीच ईश्वरसेवा हा ख्रिस्तप्रणीत मानवतावाद जोतीरावांच्या व्यक्तित्वात सगूणाबाईनेच आपल्या मानवतावादी संस्कारातून ढासून भरला होता. म्हणूनच बालपणी सगूणाबाईच्या विचार व संस्कारातून मानवतावादाचे अर्क प्राशन केलेल्या जोतीरावांनी पुढील काळात मानवाच्या सर्वांगिण कल्याणाचे व उद्धाराचे ध्येय निश्चित केले.

आईची माया दाईजवळ नसते ही म्हण सगूणाबाईने सर्वस्वी खोटी ठरविली. जन्म देणारे आईबाप यांचे जेवढे उपकार समाजावर असतील त्यापेक्षा कितीतरी पटीने जास्त सगूणाबाईचे आहेत. कारण समाजोद्धारक असा पुरुष वाढविण्याचे सर्व श्रेय सगूणाबाईचे आहेत. दीनोद्धाराची प्रत्यक्ष ज्योत म्हणजे जोतीराव आणि ती प्रज्वलीत करण्याचे महान कार्य सगूणाबाईने केले. आणि पुढील काळात सगूणाबाईच्या हातून प्रज्वलीत आलेल्या जोतीने आपल्या विचार व कार्याने समाजातील संपूर्ण अंधकार कायमचा नष्ट करुन समाजाला प्रकाशमान करण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य केले. म्हणूनच ज्या पद्धतीने राष्ट्रमाता जिजाऊने आपल्या संस्कारातून छत्रपती शिवाजी महाराजांना हिंदवी स्वराज्याच्या स्थापणेची प्रेरणा दिली. त्याचपद्धतीने सगूणाबाई क्षिरसागरने आपल्या संस्कारातून दिनदूबळ्या लोकांच्या सर्वांगिण उद्धाराची प्रेरणा जोतीरावांना दिली. जर सगूणाबाई आल्या नसल्या तर जोतीरावांच्या व्यक्तित्वाला विधायक वळण मिळाले असते का? हा प्रश्न निर्माण होतो. म्हणून जोतीरावांच्या आयुष्यात सगूणाबाई ह्या खऱ्या अर्थाने मैलाचा दगड ठरल्या याबद्दल तिळमात्र शंका नाही.

सगूणाबाई क्षिरसागर यांची पूर्वपिठीका

श्रेष्ठ माता कनकाईने संतश्रेष्ठ तुकाराम महाराजास घडविले. राष्ट्रमाता जिजाऊने शिवाजी

ISBN : 978-81-920781-6-8

महाराजांच्या व्यक्तित्वाला विविध पैलू पाडले, व त्याचप्राणे वयाच्या अवया नवव्या महिन्यातच मातृप्रेमाला पोरक्या आलेल्या जोतीरावाला महात्मापण खऱ्या अर्थाने सगूणाबाईच्या संस्कारामुळे मिळाले. अशा या मानवतावादाने व हृदय करुणेने भरलेल्या एकोणिसाव्या शतकातील सगूणाबाई क्षिरसागर या स्त्रीचा इतिहास खऱ्या अर्थाने समग्र मानवी इतिहासातील एक सोनेरी पान आहे.गोविंदराव फुल्यांची पत्नी चिमणाबाई हिला धोंडाबाई नावाची एक बहिण होती, या दोघी पुण्याजवळील धनकवडीच्या पाटलाच्या मुली धोडाबाईस हडपसर येथील क्षीरसागरांच्या तरी दिली होती. याच धोंडाबाईची सगुणा ही मुलगी.[२] सगूणा ही आपल्या नावाप्रमाणेच खरोखरच गूणवान होती, तीला अक्षरओळख नव्हती, परंत शारी व चौकसपणा हे गुण तिच्या ठिकाणी ठासून भरले होते, ती धार्मिक वृत्तीची होती.[३] आपल्या राण्यापासून प्रामाणिकता आणि परोपकारी वृत्ती तीला जन्मजात मिळाली होती, म्हणूनच पुढील काळात ह्याच परोपकारी वृत्तीचे संस्कार त्यांनी जोतीरावांच्या बालमनावर केले होते. दुदैवाने सगूणाबाईच्या माहेरी कुणीच ठरले नाही, पतीप्रेमाचा सहवाससुद्धा जास्त काळ लाभला नाही, अशा कठीण परिस्थितीमध्ये तिने जॉन नावाच्या गोऱ्या मिशनऱ्याची पोरे साभांळण्याची नोकरी धरली होती, तिला लिहीणे, वाचणे येत नव्हते, पण ती ईंग्रजी बोलत असे,[४] स्वभावाने ती सालस, प्रेमळ, आणि दयाळू होती, तिच्या देखरेखीखाली व गोऱ्या मूलांच्या सहवासात जोतीबा वाढत होता, सगूणाबाईच्या मानवतावादी संस्कारामुळेच जोतीबाच्या व्यक्तित्वाला मानवतावादी पैलू पडत होते.

महात्मा जोतीराव फुले यांच्या वैचारिक जडण घडणीत सगूणाबाई क्षिरसागर यांचे योगदान

जोतीरावांच्या व्यक्तीत्त्वाला आपल्या प्रभावी संस्कारांद्वारे महात्म्यांचे अनेक कंगोरे पाडण्यात व जोतीरावांना श्रेष्ठतम अशा उच्चतम ध्येयाकडे जाण्याची प्रेरणा कोणी दिली असेल तर ती म्हणजे जोतीरावांची मावसबहिण सगुणाबाई क्षीरसागर ह्या स्त्रीने. जोतीरावांच्या बालमनावर अत्यंत महत्त्वाचे व प्रभावी संस्कार टाकण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य केले. असे म्हटले जाते की, सुशिक्षित, सुशिल, सुस्वभावी आईच्या पोटी श्रेष्ठ पुत्र निपजतात. परंतु जोतीरावांच्या बाबतीत या विचाराला छेद दिला गेला. वयाची ९ महिने पूर्ण होत नाहीत, अजुन दूधाचे होट सुद्धा सुकलेले नव्हते. आईचे प्रेम, वात्सल्य मिळविण्याचा नैसर्गिक हक्क त्यांना मिळाला नव्हता. अशा वेळीच जोतीरावांच्या आईचे म्हणजेच चिमणाबाईंचे अकाली निधन झाले व खेळण्या बागडण्याच्या, शिक्षण घेण्याच्या वयामध्येच जोतीराव मातृप्रेमाला पोरके -झाले. आईची माया दाईला येत नाही ही म्हण सगुणाबाईने तंतोतंत खोटी ठरविली. सगुणाबाईने जोतीरावांचा सांभाळ आपल्या पोटच्या गोळ्याप्रमाणे केला. जोतीला आईच्या प्रेमाची व वात्सल्याची कमतरता केव्हाही भासू दिली नाही. म्हणूनच जोतीरावांच्या व्यक्तीत्वाच्या जडण-घडणीत सगुणाबाईने जोतीरावांवर प्रभावी असे संस्कार टाकून त्यांना त्यांच्या जीवितकार्याची योग्य दिशा दाखवून महत्त्वपूर्ण असे योगदान दिले.

ISBN : 978-81-920781-6-8

बयाच्या ९ व्या महिन्यातच जोतीच्या आईचे निधन झाल्यामुळे कोवळ्या जोतीचे संगोपन कसे करायचे हा यक्ष प्रश्न गोविंदरावांसमोर निर्माण झाला. परंतु जोतीच्या पालन-पोषणाची गंभीर समस्या सगुणाबाईच्या रूपाने नष्ट झाली. सगुणाबाईने जोतीबा या सुंदर मुलाचे हाल डोळ्यांनी पाहिले. तिला ही अवस्था पाहून भरभरून आले. तिने जोतीबाला उचलून प्रेमातिरेकाने कुरवाळीले आणि त्याचा सांभाळ करण्याची इच्छा गोविंदरावांसमोर व्यक्त केली.[५] सगुणाबाई क्षीरसागर यांना बालपणीच वैधव्य आले होते. म्हणूनच उदरनिर्वाहासाठी त्यांनी जॉन नावाच्या ख्रिश्चन धर्मोपदेशकाकडे मुले सांभाळण्याची नोकरी धरली होती. त्यामुळे ख्रिस्ती धर्मोपदेशकांच्या समर्पित जीवनाचे त्यांना अगदी जवळुन दर्शन घडले. त्यांच्या कार्यक्षमतेचा व सेवावृत्तीचा त्यांच्या मनावर खोलवर ठसा उमटला होता. जोतीच्या आईच्या निधनानंतर जोतीचा सांभाळ पोटच्या मुलाप्रमाणे करून केवळ जोतीच्या आरोग्याकडेच लक्ष दिले नाही तर जोतीरावांच्या कोवळ्या मनावर त्यांनी मानवताधर्माचे संस्कार केले. समाजातील दु:खी, कष्टी, गरीब, असहाय, वंचित लोकांची सेवा हीच ईश्वरसेवा आहे हा खरा मानवतावाद सगुणाबाईने आपल्या संस्कारातून जोतीरावांच्या व्यक्तीत्वात ठासून भरला. जोतीला वंचिताच्या उपेक्षितांच्या उद्धाराची प्रेरणा खऱ्या अर्थाने सगुणाबाईच्या महत्वाच्या विचारांतून व योग्य संस्कारांतूनच प्राप्त झाली. ज्याप्रमाणे जिजाऊने शिवबावर उत्तम संस्कारांचे व महत्वाच्या विचारांचे सिंचन करून शिवबाला बुजनांच्या मुक्तीसाठी, न्यायासाठी त्यांच्या स्वातंत्र्यासाठी हिंदवी स्वराज्य स्थापन करण्याची प्रेरणा दिली. त्याप्रमाणेच सगुणाबाईने दीन-दु:खितांची मनोभावे केलेली सेवा हीच ईश्वरसेवा आहे व यांच्या उद्धारासाठी, सर्वांगिण कल्याणासाठी केलेले कार्य हे उच्चतम दर्जाचे कार्य होय. अशा प्रकारच्या मानवतावादाचे संस्कार जोतीरावांच्या कोवळ्या बालमनावर टाकून त्यांना मानवमुक्तीचे महत्त्वपूर्ण कार्य करण्याची प्रेरणा सगुणाबाईने आपल्या महत्त्वाच्या विचारांतून व योग्य अशा संस्कारातून दिली.

आपल्या जोतीबाने ख्रिस्ती फादरसारखे व्हावे आणि त्यांच्या हातून गोरगरीब व महार-मांग समाजाची सेवा व्हावी.[६] अशी सगुणाबाईची मनोमन इच्छा होती. म्हणजेच समाजामध्ये जातियता, अस्पृश्यता व विषमतेसारख्या अमानुष प्रथा, परंपरांमुळे कनिष्ठ वर्गातील शुद्रातीशुद्र व महिला वर्ग, उपेक्षित, अधिकार व हक्कविहीन जीवन जगत आहेत. त्यांना पदोपदी तिरस्काराचे व अपमानीत जीवन जगावे लागते. म्हणूनच त्यांचे हे जीवन नष्ट करून त्यांना मानवी हक्क व अधिकार मिळवून देण्यासाठी लोकोद्धाराची चळवळ हाती यावी लागेल. याचा साक्षात्कार प्रथमच जोतीरावांना सगुणाबाईने केलेल्या उदात्त अशा संस्कारातून व महत्त्वपूर्ण विचारांच्या माध्यमातून झाला. म्हणूनच जोतीरावांच्या व्यक्तीत्वाला मानवतावादाची झळाळी आणण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य सगुणाबाईने केले.

सगुणाबाई स्वभावाने प्रेमळ व दयाळू तर होतीच. परंतु ती शार, चाणाक्ष व चतुर होती. तिच्या ठिकाणी कल्पकता व दूरदृष्टी होती. ती जोतीरावास मोठे होण्याबद्दल वारंवार उपदेश करी.

ISBN : 978-81-920781-6-8

बयाच्या ९ व्या महिन्यातच जोतीच्या आईचे निधन झाल्यामुळे कोवळ्या जोतीचे संगोपन कसे करायचे हा यक्ष प्रश्न गोविंदरावांसमोर निर्माण झाला. परंतु जोतीच्या पालन-पोषणाची गंभीर समस्या सगुणाबाईच्या रूपाने नष्ट झाली. सगुणाबाईने जोतीबा या सुंदर मुलाचे हाल डोळ्यांनी पाहिले. तिला ही अवस्था पाहून भरभरून आले. तिने जोतीबाला उचलून प्रेमातिरेकाने कुरवाळीले आणि त्याचा सांभाळ करण्याची इच्छा गोविंदरावांसमोर व्यक्त केली.[५] सगुणाबाई क्षीरसागर यांना बालपणीच वैधव्य आले होते. म्हणूनच उदरनिर्वाहासाठी त्यांनी जॉन नावाच्या ख्रिश्चन धर्मोपदेशकाकडे मुले सांभाळण्याची नोकरी धरली होती. त्यामुळे ख्रिस्ती धर्मोपदेशकांच्या समर्पित जीवनाचे त्यांना अगदी जवळुन दर्शन घडले. त्यांच्या कार्यक्षमतेचा व सेवावृत्तीचा त्यांच्या मनावर खोलवर ठसा उमटला होता. जोतीच्या आईच्या निधनानंतर जोतीचा सांभाळ पोटच्या मुलाप्रमाणे करून केवळ जोतीच्या आरोग्याकडेच लक्ष दिले नाही तर जोतीरावांच्या कोवळ्या मनावर त्यांनी मानवताधर्माचे संस्कार केले. समाजातील दु:खी, कष्टी, गरीब, असहाय, वंचित लोकांची सेवा हीच ईश्वरसेवा आहे हा खरा मानवतावाद सगुणाबाईने आपल्या संस्कारातून जोतीरावांच्या व्यक्तीत्वात ठासून भरला. जोतीला वंचिताच्या उपेक्षितांच्या उद्धाराची प्रेरणा खऱ्या अर्थाने सगुणाबाईच्या महत्वाच्या विचारांतून व योग्य संस्कारांतूनच प्राप्त झाली. ज्याप्रमाणे जिजाऊने शिवबावर उत्तम संस्कारांचे व महत्वाच्या विचारांचे सिंचन करून शिवबाला बुजनांच्या मुक्तीसाठी, न्यायासाठी त्यांच्या स्वातंत्र्यासाठी हिंदवी स्वराज्य स्थापन करण्याची प्रेरणा दिली. त्याप्रमाणेच सगुणाबाईने दीन-दु:खितांची मनोभावे केलेली सेवा हीच ईश्वरसेवा आहे व यांच्या उद्धारासाठी, सर्वांगिण कल्याणासाठी केलेले कार्य हे उच्चतम दर्जाचे कार्य होय. अशा प्रकारच्या मानवतावादाचे संस्कार जोतीरावांच्या कोवळ्या बालमनावर टाकून त्यांना मानवमुक्तीचे महत्त्वपूर्ण कार्य करण्याची प्रेरणा सगुणाबाईने आपल्या महत्त्वाच्या विचारांतून व योग्य अशा संस्कारातून दिली.

आपल्या जोतीबाने ख्रिस्ती फादरसारखे व्हावे आणि त्यांच्या हातून गोरगरीब व महार-मांग समाजाची सेवा व्हावी.[६] अशी सगुणाबाईची मनोमन इच्छा होती. म्हणजेच समाजामध्ये जातियता, अस्पृश्यता व विषमतेसारख्या अमानुष प्रथा, परंपरांमुळे कनिष्ठ वर्गातील शुद्रातीशुद्र व महिला वर्ग, उपेक्षित, अधिकार व हक्कविहीन जीवन जगत आहेत. त्यांना पदोपदी तिरस्काराचे व अपमानीत जीवन जगावे लागते. म्हणूनच त्यांचे हे जीवन नष्ट करून त्यांना मानवी हक्क व अधिकार मिळवून देण्यासाठी लोकोद्धाराची चळवळ हाती यावी लागेल. याचा साक्षात्कार प्रथमच जोतीरावांना सगुणाबाईने केलेल्या उदात्त अशा संस्कारातून व महत्त्वपूर्ण विचारांच्या माध्यमातून झाला. म्हणूनच जोतीरावांच्या व्यक्तीत्वाला मानवतावादाची झळाळी आणण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य सगुणाबाईने केले.

सगुणाबाई स्वभावाने प्रेमळ व दयाळू तर होतीच. परंतु ती शार, चाणाक्ष व चतुर होती. तिच्या ठिकाणी कल्पकता व दूरदृष्टी होती. ती जोतीरावास मोठे होण्याबद्दल वारंवार उपदेश करी.

ISBN : 978-81-920781-6-8

जोतीबांच्या ठिकाणी जे अलौकीक सुप्त गुण होते त्या गुणांचा कल्पकतेने व हिरीरीने तिने विकास घडवून आणला.[७] जोतीरावांच्या ठायी मानवतावादाचा गुण हा निसर्गत च त्यांच्या अंतरंगात ठासून भरला होता. सभोवतालचे दु:ख, दैन्य, दारिद्र्य, गरीबी, समाजातील कनिष्ठ वर्गियांचे व महिला वर्गाचे बेहाल, प्रत्यक्ष डोळ्यांनी पून मानवतावादाने त्यांचे हृदय भरून येते होते. मानवतावादाचा व मनुष्यात ईश्वर शोधण्याचा हा सुप्त गुण सगुणाबाईने योग्य वेळी ओळखला व तो गुण सर्वांगिणरित्या विकसीत करण्यासाठी त्यांनी जोतीरावांवर उत्तम संस्कार केले. दु:खी, कष्टी, दरिद्री, पिडीत, शोषित, उपेक्षित व वंचित लोकांची सेवा म्हणजेच ईश्वरसेवा होय. हा मानवतावादी विचार सगुणाबाईना लहानपणीच जोतीरावांच्या कोवळ्या मनावर ठसविला. या उत्तम संस्कारांमुळेच व मानवतावादी विचारांच्या प्रभावामुळे विषमतावादी समाजव्यवस्थेने व भ्रष्ट धर्मसंस्थेने धर्म व ईश्वराच्या नावावर पराकोटीचे शोषण व आत्यंतिक गुलामगिरी लादलेल्या समाजातील कनिष्ठ वर्गियांच्या सर्वांगिण उद्धाराची खऱ्या अर्थाने प्रेरणा मिळाली. या प्रेरणेमागे सगुणाबाईंचे उत्तम संस्कारांचे बाळकडू व विचार हीच प्रेरणाशक्ती होती.

सगुणाबाई उदरनिर्वाहासाठी गोऱ्या मिशनऱ्यांच्या तरी जेव्हा मुले सांभाळण्याचे कार्य करीत होत्या. तेव्हा त्या आपल्यासोबत जोतीरावांना सुद्धा सोबत घेऊन जात. त्यावेळेस त्या ब्रिटीश महिला आपल्या मुलांवर कशारितीने उत्तम संस्कार टाकतात. याची प्रथमत च जाणीव जोतीरावांना आली. याच जाणिवेतून महिला शिक्षणासंदर्भाचा एक वेगळा उदात्त दृष्टीकोन जोतीरावांचा तयार झाला. एक सुशिक्षित आई आपल्या मुलांवर योग्य व उत्तम संस्कार करू शकते हा महिला शिक्षणाच्या संदर्भातला विचार त्यांच्या मनात पक्का निर्माण झाला.

आयरीश कन्या ॲनी बेझंट यांनी असे म्हटले आहे की,कोणत्याही देशाच्या स्त्रियांच्या स्थितीवरून त्या देशाच्या एकंदर सुधारणेची किंवा उन्नतीची कल्पना करता येते.[८] याच तत्त्वाचे बिजारोपण सगुणाबाईमुळे गोऱ्या मिशनऱ्यांच्या महिला आपल्या मुलांवर कशा योग्य संस्कार टाकतात व उत्तम विचारांचे बाळकडू त्यांना प्राशन करतात याच जाणिवेतून आले. म्हणूनच महिलांच्या शिक्षणाची प्रेरणा जोतीरावांना याच जाणीवेतून मिळाली. कोणत्याही सुधारणेचा पाया शिक्षण आहे या तत्वाचा साक्षात्कार त्यांना झाला. शिक्षणाच्या प्रसाराशिवाय राष्ट्राची उन्नती होऊ शकत नाही. तसेच समाजातील अर्धा भाग असलेला महिला वर्ग जोपर्यंत मोठ्या संख्येने शिक्षणाच्या प्रवाहात येणार नाही तोपर्यंत समाजाचा विकास होणार नाही. पर्यायाने राष्ट्राची प्रगती खुंटेल अशा प्रकारची जाणीव त्यांच्या मनात दृढ झाली. म्हणूनच त्यांनी समाजाला पर्यायाने राष्ट्राला पुरुषांच्या शिक्षणापेक्षा महिला शिक्षणाची जास्त गरज आहे, हे ओळखले.

शिकलेल्या आईच्या पोटी वीर पुत्र निपजतात. अशी पक्की धारणा जोतीरावांची झाली. छत्रपती शिवाजी महाराज, जॉर्ज वॉशिंग्टन, नेपोलियन बोनापार्ट या राष्ट्रपुरुषांच्या माताही ज्ञानी होत्या व

ISBN : 978-81-920781-6-8

ज्ञानामुळेच त्यांनी आपल्या मुलांना उत्तम संस्कार व विचारांचे बाळकडू पाजले. याची प्रचिती जोतीरावांना झाली व या प्रचितीसाठी खऱ्या अर्थाने प्रेरकशक्ती म्हणून ज्या श्रेष्ठ स्त्रीचे नाव यावे लागेल ती स्त्री म्हणजे सगुणाबाई होय.

या उक्तीस अनुसरून राष्ट्राच्या भावी मातांच्या शिक्षणाला त्यांनी सर्वश्रेष्ठ स्थान दिले आणि शिक्षणकार्याचा आरंभ स्त्री शिक्षणापासून केला. हा आरंभ करण्यास सगुणाबाई या प्रामुख्याने कारणीभूत आहेत.[९] अशा रितीने महिला शिक्षणाचा आरंभ करण्याचा जोतीरावांच्या जीवितकार्यास सगुणाबाई या अप्रत्यक्षरित्या प्रेरणाशक्ती ठरल्या. कारण समाजातील शुद्रातीशुद्र व महिला वर्ग या कनिष्ठ वर्गातील लोकांची सेवा हीच ईश्वरसेवा आहे. या ख्रिस्तप्रणित मानवतावादाची प्रेरणा त्यांनी जोतीरावांना दिली. सगुणाबाईंच्या बालपणातील या संस्कारांमुळे व मानवतावादी विचारांमुळे जोतीरावांना समाजातील कनिष्ठ वर्गियांच्या सर्वांगिण उद्धाराची प्रेरणा मिळाली. सगुणाबाईंमुळेच जोतीरावांच्या बालपणातील संस्कारशील वयामध्ये त्यांचे लक्ष्य ख्रिस्तीधर्मातील व्याप्त या कनिष्ठ वर्गातील लोकांची सेवा हिच ईश्वरसेवा आहे. या ख्रिस्तप्रणीत मानवतावादाची प्रेरणा त्यांनी जोतीरावांना दिली. सगुणाबाईंच्या बालपणातील या संस्कारांमुळे व मानवतावादी विचारांमुळे जोतीरावांना समाजातील कनिष्ठ वर्गियांच्या सर्वांगिण उद्धाराची प्रेरणा मिळाली. सगुणाबाईंमुळेच जोतीरावांच्या बालपणातील संस्कारशील वयामध्ये त्यांचे लक्ष्य ख्रिस्ती धर्मातील व्याप्त मानवतावादाकडे गेले व त्या मानवतावादाने प्रेरीत होऊन दीन-दु:खितांची, कष्टी, अंध, अपंगांची सर्वांगिण सेवेच्या माध्यमातून उद्धार करण्याची जोतीरावांना प्रेरणा मिळाली व जोतीरावांच्या या कार्यामागे प्रेरकशक्ती सगुणाबाई या होत्या. भावी काळात जो अत्यंत श्रेष्ठ व कर्तृत्ववान महापुरुष ठरणार अशाचे पालन-पोषण करण्याचा योग परमेश्वराने जणु आपणाकडे दिला आहे. अशी भावना सगुणाबाईला नकळत जागृत करीत होती. जन्म देणारे आई-बाप यांचे जेवढे उपकार समाजावर नसतील त्यापेक्षा कितीतरी पटीने जास्त उपकार सगुणाबाईचे आहेत. कारण समाजोद्धारक असा पुरुष वाढविण्याचे सर्व श्रेय सगुणाबाईस आहे.

दीनोद्धाराची प्रत्यक्ष ज्योत म्हणजे जोतीराव ती प्रज्वलित करण्याचे महान कार्य सगुणाबाईने केले.[१०] आणि केवळ ती ज्योत प्रज्वलितच केली नाही तर त्या जोतीने समाजातील सर्व दलित, शोषित, पिढीत, आर्थिक, सामाजिक व शैक्षणिकदृष्ट्या मागासलेल्या उपेक्षित, वंचित कनिष्ठवर्गियांचे सर्वांगिण जिवन प्रकाशमान करण्याची प्रेरणा सगुणाबाईने जोतीरावांना त्यांच्या संस्कारशील वयात आपल्या संस्कारातून व विचारातून दिली.

निष्कर्ष

१) महात्मा जोतीराव फुले यांना पुढील काळात जे महात्मापण लाभले त्यात सगूणाबाईच्या संस्कारांचा वाटा मोठा आहे.

ISBN : 978-81-920781-6-8

२) महात्मा फुले यांना सामाजिक पुरोगामित्वाचा वारसा त्यांचे उत्तमप्रकारे संगोपन करणारी व त्याच्यांवर उदात्त संस्काराचे सिंचन करणारी त्यांची मावसबहीन सगूणाबाई क्षिरसागरकडून मिळाला.

३) सगूणाबाईंच्या मानवतेच्या संस्कारांमुळे जोतीरावांच्या व्यक्तित्वाला विधायक असे वळण मिळाले.

संदर्भ सुची

१) *माळी मा.गो. - सावित्रीबाई जोतीराव फुले मॅजेस्टीक पब्लिशिंग हाऊस ठाणे, चौथी आ., ऑ. २०१२, पृ.क्र. ३३.*

२) *कित्ता - पृ.क्र. ३३.*

३) *कवडे पाडुरंग बाळाजी - महात्मा जोतीराव फुले ह्यांचे चरीत्र यशवंत प्रिटींग प्रेस, नासीक, प्रथमावृत्ती २४ फेब्रु १९६८, पृ.क्र.१२.*

४) *माळी मा.गो. - क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले पुर्वोक्त पृ.क्र.३३.*

५) *कित्ता - पृ.क्र. ३४.*

६) *नरके हरि, फडके य.दि. (संपादक) - महात्मा फुले गौरव ग्रंथ (खंड पहिला), महात्मा फुले चरित्र साधने प्रकाशन समिती, महाराष्ट्र राज्य शिक्षण विभाग, मंत्रालय, मुंबई, सुधारीत द्वितीयावृत्ती १९९१, पृ.क्र.६८.*

७) *माळी. मा.गो. - क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले मॅजेस्टीक पब्लीशिंग हाऊस, ठाणे, चौथी आवृत्ती २०१२, पृ.क्र.९६.*

८) *कित्ता - पृ.क्र. ३६.*

९) *कित्ता - पृ.क्र. ३७.*

१०) *कवडे पांडूरंग बाळाजी - महात्मा जोतीराव फुले ह्यांचे चरीत्र यशवंत प्रिटींग प्रेस, नासिक, प्र.आ. १९६८, पृ.क्र.१२.*

ISBN : 978-81-920781-6-8

CBCS PATTERN

KAVAYITRI BAHINABAI CHAUDHARI NORTH MAHARASHTRA UNIVERSITY, JALGAON

S.Y.B.Sc. | GG 303 - 403 | SEM III - IV

PRACTICAL GEOGRAPHY

Dr. U. V. Nile | Dr. N. S. Pawar
Prof. R. R. Deore | Dr. S. S. Bhavsar

Pragnant

GEOGRAPHY

As per U.G.C. Guidelines and also on the basis of revised syllabus of **Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University** with effect from June, 2019. Also useful for all Universities.

PRACTICAL GEOGRAPHY

S.Y.B.Sc. (CBCS) | GG-303 & 403 | Sem III & IV

- AUTHORS -

DR. UTTAM V. NILE
Department of Geography,
P.S.G.V.P. Mandal's Arts, Sci. & Comm. College,
Shahada, Dist. Nandurbar.

DR. N. S. PAWAR
Department of Geography
G.T. Patil Arts, Science & Commerce College,
Nandurbar, Dist. Nandurbar.

PROF. RUPESH R. DEORE
Department of Geography,
G.T. Patil Arts, Science & Commerce College,
Nandurbar, Dist. Nandurbar.

DR. SANDIP S. BHAVSAR
Department of Geography,
G.T. Patil Arts, Science & Commerce College,
Nandurbar, Dist. Nandurbar.

Prashant Publications

Prashant Publications

© Reserve

PRACTICAL GEOGRAPHY

S.Y.B.Sc. (CBCS) | GG-303 & 403 | Sem III & IV

Publisher and Printer
Prashant Publications
3, Pratap Nagar, Shri Sant Dnyaneshwar Mandir Road,
Near Nutan Maratha College, Jalgaon 425001.

. Phone . Website . E-mail
(0257) 2235520, 2232800
www.prashantpublications.com
prashantpublication.jal@gmail.com

. First Edition . ISBN . Type Setting
December, 2019
978-93-89492-99-6
Prashant Publication

Price : ₹ 85/-

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored i
a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electroni
mechanical, photocopying (xerox copy), recording or otherwise, without the pric
permission.

CBCS PATTERN

AS PER NEW SYLLABUS OF

KBC NORTH MAHARASHTRA UNIVERSITY

S.Y.B.Sc. TEXT BOOKS

PHYSICS

PHY 301	Thermodynamics and Kinetic Theory of Gases
PHY 302 (A)	Electronics - I
PHY 302 (B)	Instrumentation
PHY 303-403	Practical Physics
PHY 304 (SEC)	Renewable Energy & Energy Harvesting
PHY 401	Waves, Oscillations and Acoustics
PHY 402	Optics and Lasers
PHY 404 (SEC)	Electrical Circuits and Network Skills

ELECTRONICS

ELE 301	Analog Communication
ELE 302	Microprocessors and Applications
ELE 401	Digital Communication
ELE 402	Microcontrollers and Applications

CHEMISTRY

CH 301	Physical & Inorganic Chemistry
CH 302	Organic & Inorganic Chemistry
CH 303-403	Practical Chemistry
CH 304 (SEC)	Basic Analytical Chemistry
CH 401	Physical & Inorganic Chemistry
CH 402	Organic & Inorganic Chemistry
CH 404 (SEC)	Advanced Analytical Chemistry

BOTANY

BOT 301	Plant Anatomy
BOT 302	Plant Physiology
BOT 303-403	Practical Botany
BOT 304 (SEC)	Mushroom Culture Technology
BOT 401	Plant Embryology
BOT 402	Plant Metabolism
BOT 404 (SEC)	Nursery and Gardening

ZOOLOGY

ZOO 301	Physiology
ZOO 302	Biochemistry
ZOO 304 (SEC)	Apiculture
ZOO 401	Genetics
ZOO 402	Evolutionary Biology
ZOO 404 (SEC)	Medical Diagnostics

MATHEMATICS

MTH 301	Calculus of Several Variables
MTH 302 (A)	Group Theory
MTH 302 (B)	Theory of Groups and Codes
MTH 304 (SEC)	Set Theory and Logic
MTH 401	Complex Variables
MTH 402 (A)	Differential Equations
MTH 402 (B)	Differential Equations and Numerical Methods
MTH 404 (SEC)	Vector Calculus

COMPUTER

CS 301	Data Structure - I
CS 302	Programming in C++ - I
CS 401	Data Structure-II
CS 402	Programming in C++ - II

MICROBIOLOGY

MB 301-403	Microbiology
MB 401-402	Microbiology

GEOGRAPHY

GG 301	Environmental Geography
GG 302	Physical Geography of Maharashtra
GG 401	Human Geography
GG 402	Economic Geography of Maharashtra

PRASHANT PUBLICATIONS

3, Pratap Nagar, Shri Sant Dnyaneshwar Mandir Road,
Near Nutan Maratha College, Jalgaon- 425 001.
Ph.: 0257-2235520, 2232800 Web.: www.prashantpublications.com
E-Mail : prashantpublication.jal@gmail.com

Prashant

ISBN 978-93-89492-99-6

इतिहास संशोधन पद्धती

Research Methodology in History

डॉ. व्हि. जी. सोमकुवर । डॉ. एन. डी. भामरे

अथर्व

इतिहास संशोधन पद्धती

Research Methodology in History

यूजीसीच्या मार्गदर्शक तत्त्वानुसार, क.ब.चौ. उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव व
इतर विद्यापीठांच्या नवीन अभ्यासक्रमावर आधारित तसेच
M.P.S.C., नेट-सेट व इतर स्पर्धा परीक्षांसाठी उपयुक्त असे अद्ययावत पुस्तक.

इतिहास संशोधन पद्धती

Research Methodology in History

डॉ. व्हि. जी. सोमकुवर
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,
गजमल तुळशिराम पाटील महाविद्यालय,
नंदुरबार.

डॉ. एन. डी. भामरे
सहयोगी प्राध्यापक व विभागप्रमुख, इतिहास विभाग,
विद्या विकास मंडळाचे कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
अक्कलकुवा, जि. नंदुरबार.

अथर्व

अथर्व पब्लिकेशन्स

अथर्व पब्लिकेशन्स

इतिहास संशोधन पद्धती
Research Methodology in History

© सर्व हक्क सुरक्षित

ISBN 13 : 978-93-88544-79-5

पुस्तक प्रकाशन क्र. ६८८

प्रकाशक

युवराज भटू माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स

धुळे : १७, देवीदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे ४२४००१.

संपर्क: ९४०५२०६२३०

जळगाव : शॉप नं.२, नक्षत्र अपार्टमेंट, शाहू नगर हौसिंग सोसायटी,
तेली समाज मंगल कार्यालय समोर, जळगाव ४२५ ००१.

संपर्क : ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७

ई-मेल : atharvapublications@gmail.com

वेबसाईट : www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती : ३० सप्टेंबर २०१९

अक्षरजुळवणी : अथर्व पब्लिकेशन्स

मूल्य : ₹ १५०/-

या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्माण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी - फोटोकॉपिंग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

समीक्षा : संकल्पना, स्वरूप आणि पद्धती

- प्रा.डॉ. विजया पाटील -

कुमुद पब्लिकेशन्स

समीक्षा : संकल्पना, स्वरूप आणि पद्धती

© सुरक्षित

ISBN : 978-93-85027-99-4

प्रकाशक व मुद्रक
सौ. संगीता युवराज माळी

कुमुद पब्लिकेशन्स्
गट नं. १८, प्लॉट नं. १०, श्रीरत्न कॉलनी,
पिंप्राळा परिसर, जळगाव - ४२५००१.
संपर्क : ९४०५२०६२३०, ९९२३३७४८२२
ई-मेल : kumudpublications@gmail.com

प्रथमावृत्ती : जून २०२०

अक्षरजुळवणी : कुमुद पब्लिकेशन्स

मूल्य : २००/-

E-Book *available on*
amazon.in ▪ GooglePlayBooks ▪ atharvapublications.com

ऑनलाइन पुस्तक खरेदीसाठी www.atharvapublications.com

या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्माण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी - फोटोकॉपिंग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

Vol. I

BUSINESS SKILLS

A Phenomenal Companion to Aspirants

Dr. Vijay Chaudhari | Prof. Dinesh Deore

Atharva Publications

Business Skills

© Reserved

ISBN : 978-93-88544-83-2

Book No. : 692

Publisher & Printer: Mr. Yuvraj Mali

Dhule	:	17, Devidas Colony, Varkhedi Road, Dhule - 424001. Contact: 9405206230
Jalgaon	:	Shop No. 2, Nakshatra Apartment, Shahu Nagar Housing Society, Front of Teli Samaj Mangal Karyalaya, Jalgaon - 425001. Contact: 0257-2239666, 9764694797
Email	:	atharvapublications@gmail.com
Website	:	www.atharvapublications.com
First Edition	:	September 2019
Type Setting	:	Atharva Publications
Price	:	₹ 100/-

Disclaims: The authors are solely, responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The Editors or Publishers do not take responsibility for the same in any manner. Errors if any are purely unintentional and readers are requested to communicate such error to the Editors or Publishers to avoid discrepanices in future.

BUSINESS SKILLS

Dr. Vijay Chaudhari: He is an Assistant Professor in the PG Department of English and Head, NCC Unit at NTVS's G.T. Patil Arts, Commerce and Science College, Nandurbar. He is also Research Supervisor in English affiliated to KBC North Maharashtra University, Jalgaon. He has attended and presented research papers in about 50 conferences and seminars at International, National and State level successfully. His two books have been published internationally by Lambert Academic Publication, Germany. He is also contributing as an Executive Editor to online Journal of Higher Education and Research Society: A Refereed International published by Higher Education and Research Society, Mumbai.

Prof. Dinesh Deore: He is an Assistant Professor in the PG Department of English and the Incharge of Language Laboratory at NTVS's G.T. Patil Arts, Commerce and Science College, Nandurbar. He is the coordinator of the 'Certificate Course in Communication Skills in English' affiliated to the KBC North Maharashtra University, Jalgaon. He has completed a minor research project titled 'Ecological Concerns in R. K. Narayan's Short Stories' under the scheme of VCRMS. He has attended and presented research papers in about 35 conferences and seminars at International, National and State level successfully. He is also contributing as an Assistant Programme Officer to NSS unit of the College. Conducted and Coordinated many language and Skill oriented workshops for students. He is pursuing Ph.D. from KBC NMU Jalgoan.

Atharva Publications
अथर्व
ऑनलाईन पुस्तक खरेदीकरिता...
www.atharvapublications.com
978-93-88544-83-2
₹-100/-
9 789388 544832
692

BUSINESS SKILL

VOLUME - II

• Dr. Dinesh Deore
• Dr. Vijay Chaudhari

Atharva Publications

BUSINESS SKILL

(Volume - II)

© Reserve

ISBN : 978-93-90288-04-5

Publisher & Printer: Mr. Yuvraj Mali

Dhule	:	17, Devidas Colony, Varkhedi Road, Dhule - 424001. Contact: 9405206230
Jalgaon	:	Shop No. 2, 'Nakshatra' Apt., Housing Society, Shahu Nagar, Opp. Teli Samaj Mangal Karyalaya, Jalgaon - 425001. Contact: 0257-2239666, 9764694797
Email	:	atharvapublications@gmail.com
Website	:	www.atharvapublications.com
First Edition	:	15th August 2019
Type Setting	:	Atharva Publications
Price	:	₹ 150/-

Dr. Dinesh Deore : He is an Assistant Professor in the PG Department of English and the Incharge of Language Laboratory at NTVS's G.T. Patil Arts, Commerce and Science College, Nandurbar. He is the coordinator of the 'Certificate Course in Communication Skills in English' affiliated to the KBC North Maharashtra University, Jalgaon.He has completed a minor research project titled 'Ecological Concerns in R. K. Narayan's Short Stories' under the scheme of VCRMS. He has attended and presented research papers in about 35 conferences and seminars at International, National and State level successfully. He is also contributing as an Assistant Programme Officer to NSS unit of the College. Conducted and Coordinated many language and Skill oriented workshops for students. Co-authored a book titled as *Business Skills: A Phenomenal Companion to Aspirants.* He is pursuing Ph.D. from KBC NMU Jalgoan.

●●●

Dr. Vijay Chaudhari: He is an Assistant Professor in the PG Department of English and Head, NCC Unit at NTVS's G.T. Patil Arts, Commerce and Science College, Nandurbar. He is also Research Supervisor in English affiliated to KBC North Maharashtra University, Jalgaon. He has attended and presented research papers in about 50 conferences and seminars at International, National and State level successfully. His two books have been published internationally by Lambert Academic Publication, Germany. Co-authored a book titled as *Business Skills: A Phenomenal Companion to Aspirants*.He is also contributing as an Executive Editor to online Journal of Higher Education and Research Society: A Refereed International published by Higher Education and Research Society, Mumbai.

●●●

आता ई-बुक स्वरूपातही
अथर्वची सर्व पुस्तके उपलब्ध...

- amazon.com
- Google Play Books
- Bookgana.com
- atharvapublications.com

ATHARVA PUBLICATIONS
ऑनलाईन पुस्तक खरेदीकरिता...
www.atharvapublications.com

ISBN 978-93-90288-04-5
₹ - 150/-

BUSINESS SKILL

VOLUME - II

• Dr. Dinesh Deore
• Dr. Vijay Chaudhari

Atharva Publications

BUSINESS SKILL
(Volume - II)

© Reserve

ISBN : 978-93-90288-04-5

Publisher & Printer: Mr. Yuvraj Mali

Dhule	:	17, Devidas Colony, Varkhedi Road, Dhule - 424001. Contact: 9405206230
Jalgaon	:	Shop No. 2, 'Nakshatra' Apt., Housing Society, Shahu Nagar, Opp. Teli Samaj Mangal Karyalaya, Jalgaon - 425001. Contact: 0257-2239666, 9764694797
Email	:	atharvapublications@gmail.com
Website	:	www.atharvapublications.com
First Edition	:	15th August 2019
Type Setting	:	Atharva Publications
Price	:	₹150/-

Dr. Dinesh Deore : He is an Assistant Professor in the PG Department of English and the Incharge of Language Laboratory at NTVS's G.T. Patil Arts, Commerce and Science College, Nandurbar. He is the coordinator of the 'Certificate Course in Communication Skills in English' affiliated to the KBC North Maharashtra University, Jalgaon.He has completed a minor research project titled 'Ecological Concerns in R. K. Narayan's Short Stories' under the scheme of VCRMS. He has attended and presented research papers in about 35 conferences and seminars at International, National and State level successfully. He is also contributing as an Assistant Programme Officer to NSS unit of the College. Conducted and Coordinated many language and Skill oriented workshops for students. Co-authored a book titled as *Business Skills: A Phenomenal Companion to Aspirants*. He is pursuing Ph.D. from KBC NMU Jalgoan.

●●●

Dr. Vijay Chaudhari: He is an Assistant Professor in the PG Department of English and Head, NCC Unit at NTVS's G.T. Patil Arts, Commerce and Science College, Nandurbar. He is also Research Supervisor in English affiliated to KBC North Maharashtra University, Jalgaon. He has attended and presented research papers in about 50 conferences and seminars at International, National and State level successfully. His two books have been published internationally by Lambert Academic Publication, Germany. Co-authored a book titled as *Business Skills: A Phenomenal Companion to Aspirants*.He is also contributing as an Executive Editor to online Journal of Higher Education and Research Society: A Refereed International published by Higher Education and Research Society, Mumbai.

●●●

आता ई-बुक स्वरूपातही
अथर्वची सर्व पुस्तके उपलब्ध...

- amazon.com
- Google Play Books
- Bookgana.com
- atharvapublications.com

ATHARVA PUBLICATIONS
ऑनलाईन पुस्तक खरेदीकरिता...
www.atharvapublications.com

ISBN 978-93-90288-04-5
₹ - 150/-